जोल-
२५१

यसोदाजी अनेक प्रकारकी सांमिग्री सिध करिकें आप
नें पुत्र अर्पें कुमारिकाकों दे पगावत हें ॥ छिनाछिन मेंनो
तनवस्तु श्रीपें सोंदाजी देके पगाए पुत्रकों ॥ सोकुमारिका
सबलेलेके वृंदावन गोवरधन परआरिके ॥ प्रभुकों श्रीस्वां
मिनीजी संपुत्र अंगीकार करावत हें ॥ याप्रकार कुमारिका
हू अनेक प्रकारकी रहस्यलीला श्री वृंदावनमें करतहें ॥ श्री
रश्री चंद्रावलीजी अनेक ग्रहकाज गोरस वेचन फूलवीन
न आदि मिस करिकें याही प्रकार श्रीस्वामिनीजी हू गिरिरा
ज परआय श्रीजीकें संग नित्यलीला विहार करतहें ॥ और
रात्रिकों सदा विहार आदि लीला गिरिराज पर करतहें ॥ या
प्रकार सों श्रीवृंदावनमें लीला पुष्टिहे ॥ और श्रीयमुना
जी तो सर्व ठिकानें सवमें व्यापकहें ॥ जहां जेसो कार्य होय
लीला संबंधी तहां ताही स्वरूप विराजतहें ॥ इनकों अंतराय
नांहीहे ॥ सदा श्री ठाकुरजीके निकट ही रहतहें ॥ तातें श्रीवृं
दावनमें राजभोग सहित चार भोग और चार खेल कीटी तहें ॥
सो यासों व्रजमें दोयस्थल मुख्यहें ॥ और महाअंतरंगहें ॥



श्रीगोकुल और श्रीवृंदावन तहांकोई आसंका करेंजो
व्रज तो सबही भगवदस्वरूपहें ॥ तुम दोस्थल मुख्य क्यों
कहो ॥ तहांकहतहें जो व्रजवास सबही परम उत्तम श्रेष्टहे ॥ ता
में श्रीगोकुल श्रीवृंदावन गोवरधन में मुख्यहें ॥ ताको प्रमा
न कहतहें ॥ वृंदावनें गोकुलेवा तथामें मनसिक्का चित ॥ द
तिवाक्यात ॥ ह नमहा अपी वृंदावन गताप्रिय: ॥ इत
वचनात ॥ वृंदावनें चारु वहहहनें मन्मनोरथपूरयैं सूरसूते
इत्यादिक अनेक वचनहें ॥ नंदालयकी लीला श्रीगोकुल
निकुंजलीला गोवरधन श्रीवृंदावन ॥ तातें यह श्री आचा
र्यजी महाप्रभूकों नांमहें ॥ गोवर्धनस्थिर त्साह: यह श्री
आचार्यजी महाप्रभूनको नांमहे ॥ श्रीगोकुलें कृतावा
स: यह श्रीगुसांईजीको नांम ॥ यातें दोइ स्थल मुख्यहें ॥ श्री
यमुनांजीके संगतें कुमारिकाको अंगीकार भयो ॥ काहेतें का
त्यायनी देवीको मिस करिकें श्रीयमुनाजीको संग पूजन
कीए तब हृदयमें भगवदभाव बढ्यो ॥ तातें व्रजमें श्रीयमु
नांजी बडीहें ॥ सो मुख्यहें ॥ इनके संबंध इनकी कृपा विनां

वीतानीकोसाम

त्वमे

डोल- कवहूं पुष्टि मारग में प्रवेस न होइ ॥ ताते श्री यमुनाजी के तीर
ऊपर पुलिन में डोल झूलत हें ॥ श्री यमुनाजी के भाव ते यह मु
२५२ ख्य हें ॥ सगरे ब्रज भक्त सुंदर पुलिन में डोल बांधत हें ॥ श्री
स्वामिनीजी श्री यमुनाजी आदि सर्व भक्त प्रभु साहित अ
पने अपने मनोरथ पूर्ण करत हें ॥ काहे तें श्री यमुनाजी हें ॥
सो अलौकिक देह की सिधि करत हें ॥ तनुनवत्वमेतावतान
रति: दुर्लभतमा हें ॥ इति वाक्यात ॥ ताते श्री यमुनाजी के
डोल मुख्य हें ॥ और गिरराज के संबंध ते भीलनी पुलिं
को भक्त उतपत भई ॥ काहे तें निकुंज में श्री स्वामिनीजी
सहित लीला करत हें ॥ ता लीला संबंधी कुंकुम [illegible]
६ दी ठाकुरजी के चरनकमल को प्रसादी सो गलमलतान के
लगि रहत हें ॥ सो पुलिंदी भाव पूर्वक अपने अ न में मु
ख में लगाय के अपनो विरहताप निवारन करत ही पुलि दी
नको श्री ठाकुरजी के चरनकमल को कुंकुम शारा सगरी
लीला को अनुभव भयो ॥ परमानंद पायो सो उनको
मन प्रभु की सेवा में लग्यो ॥ ताते सुंदर सुंदर कंद मूल फल उ

परामां सिध करि के द्वारि ते धरि देत हें ॥ सो ब्रज भक्तन सहित प्रभू
आरोगे के पुलिंदी को गिरराज के संबंध ते पुष्टि लीला की पो
रसँ दान कर्यो ॥ ताते यह श्री आचार्यजी महाप्रभून के पु
ष्टि मारग में श्री गोकुल और गोवरधन श्री वृंदावन में दोऊ
स्थल मुख्य हें ॥ ताते श्री गोवरधन पर श्रीजी को डोल मुख्य
हे ॥ और सगरे ब्रज हू में डोल उत्सव को प्रकार प्रसिध हे ॥ का
हेते सगरे ब्रज में श्री ठाकुरजी की विहारलीला संबंधनी स्वा
मिनीजी हें ॥ अनेक गोपन के घर में प्रगटी हें ॥ कोई को व्या
ह भयो हे ॥ कोई कुंमारी हें ॥ सो जिनको व्याह भयो हे ॥ ति
नको पति हू जेसें भुंज्यो अंन होइ सो फेरु बीज बोवें तो ख
मिं उपजे नांही हें ॥ या प्रकार सो नाम मात्र श्री ठाकुरजी
के पराकिया भाव सो रस सास्त्र में मुख्य कहे हें ॥ सो ऊ लीला
करनी हे ॥ ताके अर्थ ब्रज भक्तन को व्याह भयो हे ॥ जितने ब्रज
भक्त हें ॥ ते सब भगवद्योग सामिग्री हें ॥ महा अलौकिक स्व
रूप ॥ कोई इनकी ओर दृष्टि किये ओर भस्म भयो ॥ तहां
यह कोई कहे संदेह होइ जो तुम भगवद्योग्य कहे हें ॥ गोपन

ल· ५३

कोसंबंधनांहींकहे॥ सोइनकेपुत्रादिकबंरनांकितसोंकेसेंब
नें॥ यहसंदेहहोइ॥ तहांश्रीआचार्यजी महाप्रभूंदसमस्कंध
सुबोधनीमेंनिरनेंकरिकेंकहेहें॥ अंबरगीतादिकअनेंक
भक्तनेंब्रजभक्तनकेपुत्रादिकहें॥ सोअलौकिकविषेंक
रिकेंनांहीहें॥ श्रीठाकुरजीकोपरात्परसप्रगटकरिवेकी
इछ्छानहीं॥ तबगोपनसोंबाहमायाकरिकेंभयो॥ विनांविवेक
[illegible]मायातेंपुत्रादिकहूप्रगटकिए॥ यामेंसंदेहनकरनो
काहेतेंभगवदइछ्छातेंमायाकोयहूसामर्थहें॥ जोको
टांनकोटिब्रह्मांडएककौछिनमेंप्रगटकियेचाहें॥ औरदे
वकीजीकोगर्भआकरसनकरिरोहिनीजीमेंधरयोसो
श्रीबलदेवजीप्रगटे॥ एकजोगीजोगसाधकेंअनेंकप्र
कारअनेंकदेहीमेंप्रवेशजातहें॥ तोप्रभूकीलीलाकोकोंन
पारपावे॥ कर्तुंअकर्तुंअन्यथाकर्तुंसर्वसामर्थ॥ तातेंमाया
करिकेंप्राकृतशरीरसासिधकरनार्थंब्रजभक्तनकेपुत्रादिक
हें औरासिधांतकरिकेंदेखियेतोवेदरिचासर्वब्रजभक्तहें॥
तातेंश्रुतिरूपाइनकोंकहतहें॥ तामेंदोयप्रकारकीश्रुतिरू

पा॥ एकपुष्टिश्रुतिएकमर्यादाश्रुति॥ सोदोऊब्रजमेंप्रगटी॥ ता
मेंपुष्टिश्रुतिहेंसोसबब्रजभक्तश्रीठाकुरजीकेभोग्ययुक्तहें॥ ति
नसोंनित्यनौतनरासविलासलीलाहें॥ औरमर्यादाश्रुतिब्र
जमेंप्रगटीतिनसोंश्रीबलदेवजीरासविलासकरतहें॥ याप्र
कारब्रजभक्तनकोसरूपमहाअलौकिकजानिये॥ सोब्र
जभक्तअनेंकगोपनकेघरप्रगटहोइकेंश्रीठाकुरजीमेंमनल
गायो॥ सोहोरीमेंतोभलीभांतिसोंअनेंकप्रकारकीलीलाक
री॥ तामेंब्रजभक्तनकोपूरनमनोरथभयोनांहीं॥ समस्तग्वाल
गोपगुरजनकेंआगेंघोनंदालयमेंकुंमारिकासंगडोलफीर
बनांसबदेखिकें॥ श्रीठाकुरजीकेंसंगनांनांप्रकारकीलीला
करिकेंसगरेब्रजभक्तननेंअपनेंअपनेमनमेंयहमनोर्थ
कियो॥ जोअपनेंनिकुंजमेंडोलकीरचनांकरिये॥ परंतुश्री
स्वांमिनीजीसहितश्रीठाकुरजीपधारें॥ तोहमारोसगरो
मनोर्थपूरनहोइ॥ याप्रकारसगरेब्रजभक्तनकोमनोर्थजां
निकेंश्रीस्वांमिनीजीसहितप्रभूप्रसंनहोइकेंसगरेब्र
जभक्तनसोंकहे॥ जोतुमजाइकेंअपनेंअपनेंनिकुंजमें

डोल. डोलकीस्वनाकरो॥तुम्हारोसगरोमनोर्थपूर्णकरेंगे॥यह
२५४ स्तानिकेसगरेव्रजभक्तप्रसंनहोइकेंसगरेव्रजमेंअपनेंअ
पनेंनिकुंजमेंडोलबांधे॥सगरीहोरीकोसाजासिंधारिकें
अन्हकेंपधरायवेकोमनोर्थकरतहें॥तबश्रीस्वामिनीजीस
हितश्रीठाकुरजीसगरेव्रजभक्तनकेकुंजमेंअनेकरूपक
रिकेंपधारे॥सवनकेमनोर्थपूर्णकीए॥सर्वव्रजभक्तनकी
स्वामिनीआरोगे॥अनेकप्रकारकेविहारविपरीतरमनकी
ए॥एकयहप्रकारभावनाकरिये॥अथवायहभावबताइ
ये॥सोश्रीस्वामिनीजीआदि॥श्रीचंद्रावलीजीआदिसब
अपनेंअपनेंनिकुंजमेंडोलउत्सवकीए॥सोप्रभुसबको
श्रीस्वामिनीजीकेनिकुंजमेंपधारे॥पाछेंअनेकरूपधार
केंसगरेव्रजमेंसगरीस्वामिनीजीनकेनिकुंजमेंपधारस
बनकेमनोर्थपूर्णकीए॥सगरीस्वामिनीअपनेंअपने
मनमेंयहजानेंजोश्रीठाकुरजीमेरेवससगरेव्रजभक्तनकोहो
तभए॥यहभावविचारनो॥डोलकोभावअत्यंतगोपनिकुं
जलीलाहे॥ताते~~[struck]~~डोलपैनेतामाधुरी॥आवकी

बेरआदि
डारआसपासपद्मवकेलासोंनिकुंजकोभावहे॥फलफूलल
गेहें॥डोलकेगादीकेखलसिआसपासकारीश्रीयमुनाजीरूप
चारभोगचारखेलहें॥कहूंतीनभोगतीनखेलहें॥सोयाते
जोप्रथमखेलश्रीस्वामिनीजीको॥दूसरोश्रीयमुनाजीको
है॥सोकहूंभारोखेलतहें॥कहूंश्रीस्वामिनीजीसोंमिलो
खेलतहें॥तातेंतीनहें॥दूसरोखेलकुमारिकाको॥तीसरो
खेलश्रुतिरूपाश्रीचंद्रावलीजीकोहे॥सगरेव्रजकीस्वामि
नी॥तातेंभारीखेलहे॥झोटादेतहेंसोरमनादिकहें॥बीचबी
चभोगसोअंनंपांनरमनमें॥असमर्थनहोइखेलसोरस
कोबधहोइउद्दीपनहोइश्रीस्वामिनीजीकेतीनरूपव्रजमें
मुख्यहें॥विहाररसमेंप्रगटीहें॥कुमारिकाकुचमर्दनप्रभु
कीएतहाँतेंप्रगटीहें॥तातेंछोटीहे॥श्रीयमुनाजीश्रुतिसुर
ततेंप्रगटीतातेंतीनोंनकोविहारहीप्रियहें॥औरयाभाव
तेंडोलकोखेलहे॥रागसारंग॥झूलतडोलराधिकासंग॥गो
वर्धनपर्वतकेऊपरखेलतअतिरसरंग॥१॥प्रथमखेल
राधेमनहुलस्योकेसरिलपटतअंग॥दूजोखेलरच्योचंद्रा

न

डोल: बालअबीरगुलालसुरंग॥४॥तीजोखेलाकयोललितादि
२५५ कअग्निकुंमारीसंग॥चोथोखेलकियोहेंदावन[illegible]पियमो
हेरासिकअनंग॥३॥यहभावहे॥तीनखेलभक्तनकोरीतर
मन॥एकखेलअन्नकोविपरीतरमन॥डोलकोदिनवसंत
पंचमीकोसींगार॥सोयातेंजेसेकामकोचडावनउतार
नरूरीतमेंहे॥तानावतें॥औरडोलउत्सवमेंश्रीजीमुख्य
हे॥ताकोभावयहहेजो॥उरहकेवडा॥चंद्रमाआकारश्रीस्व
वलीजीकोभाव॥श्रीस्वामिनीजीतीनकेभावमें॥परप
कनऐसनेंहरूप॥तिनमोंमिरचआदिलोंनआदिसको
नीकुंमारिकाएतीनोंमिलिकेंतिनमेंजलश्रीयमुनाजी
तिनकेभावमेंमगनभये॥काहेतें[illegible]डोलउत्सवश्री[illegible]
स्वामिनीजीश्रीयमुनाजीकेउपरंगमेंमुख्यहे॥जेसेपावे
की वकाश्रीयमुनाजी[illegible]श्रीगोकुलकीमुख्यहे॥तेसेंहीडो
लउत्सवश्रीयमुनाजीकेउपरंगचारोदिसवीचपुलिनमें
यातेंजोरहस्यलीलाकोध्यानआरकोंनहोइ॥तातेंजलको
जीमोंवसकरियेश्रीयमुनाजीकेमनोरथकोयहडोल

तटपेआन्हालद्रीयहुआत्तो४

उत्सवहे॥औरकांजीकीसांमिग्रीहे॥औरडोलफूलेंपीतगुला
लकेसारकेखाटेसवआहीधरीधोइजातहे॥ताकोभावयहहे॥
जोसवगरहेजभक्तनकोमनोरथवारोजूथपतिस्वामिनी॥तिन
सवनकेसंगरीतविपरीतविहाररसगरीहोरीकेरसानेचोइनअ
निर्वचनीयलीलासगरीरात्रिदिनाकिये॥तातेंयहलीलामें
श्रीवलदेवजीसखाग्वालनसोंगोप्यहे॥तातेंडोलफूलेंपाछे
श्रीस्वामिनीजीनेंआप्यादईजोहोरीसंबंधीसांमिग्रीसग
रीगोप्यकरदेह॥रंचकहूंऊपरनहोइ॥तवसखीसवमिलि
केंतथाश्रीदामाआदिएकादससखाश्रीगोकुलजीके॥एका
दसइंद्रीरूपऔरपुष्टिलीलाकेसहायकगोपामिलिके
गुलालकेसरआरगजाचोवाकेदागसवधोइकेंफुकाइडोल
कीसांमिग्रीकेलाकेखंभ॥आंवमाधुरीकीडारिआसाप
लवकीडारवंदनवारमालासवश्रीयमुनाजीआपनेंजीत
रसधारिलिये॥तातेंश्रीयमुनाजीमेंपधरावतहे॥इत्या
दिकडोलउत्सवकेअनेकभावहे॥कछूएककहेहे॥श्रीआ
चार्यजीश्रीगुसांईजीकीकृपातेंहृदयमेंभावकीवृधिहोतहे॥

डोल
५६

॥ इतिश्रीहरिरायजीकृतहोरीडोलउत्सवकोभावभावसंपू
र्ण॥ अथद्वितीयापाटकोभावनालिख्यते॥ होरीखेलेंतोय
हभावश्रीठाकुरजीस्वेतवस्त्रपहरतहैं॥ जोमेंगुनानिकारिर
हतहों॥ निर्विकारसुद्धउज्जलहों॥ तबभक्तअपनेंअपनें
भावकरिकेंश्रीठाकुरजीकोंभलीभांतिधरकतहैंअप
नेंगुनमयभावरूपमेंलेंकररंगतहैं॥ याभांतिनित्यभक्त
नकेभावसोंहोरीषेलें॥ तेंऊसर्वात्मगुनमयश्रीठाकुरजी
लीनभए॥ तबश्रीस्वामिनीजीसगरेब्रजभक्तडोलउत्सव
कीलीलाकारिएसोकेलच्छापरहे॥ रोमरोमरसप्रगटकरि
श्रीठाकुरजीकोंअनुभवकरावे॥ जोश्रीठाकुरजीब्रजभक्त
वरीस्वामिनीजीकेवसहोइकेंजदपिगुनंकरिरहितहुते॥ तो
ऊसर्वात्माभावपूर्वकतनमनप्रानसबगुनमयहोइरस
परवसभए॥ तबश्रीस्वामिनीजीद्वितीयापाटकोउत्सवकि
येजोआजुहमारोमनोरथपूर्णकीएभयोजोहृदयस्वरूपध
रतथासिंघासनपरसर्वात्मभावकरिगुनमयमग्नभएता
तेंउत्सवमोंनअभंगकरायसुनहरीजरीजडाऊकुलह

अपनेनिकुंजमहलकोराजतिलकश्रीठाकुरजीकोंकिये॥ता
हीतेंद्वितीयापाटतेंफूलमंडलीआरंभभएतन्मारगमेंप्रगट
हें॥ तामेंप्रथमगुलाबकेफूलनकीहोइ॥ सोश्रीस्वामिनीजी
केअधरकपोलनतेंप्रगटहेंगुलाब॥ तापाछेंपीतहेसोश्री
स्वामिनीजीकोसरूपदूसरेकुंमारिकाकोहे॥ राधासहच
रीतिनकेभावतें॥ निवाराश्रीचंद्रावलीजीकेभावतें॥ श्रीय
मुनाजीतोसबमेंप्रविष्टहें॥ औरचंपामोतियाआदिकेभा
ववरननकरतहें॥ चंपामानसमयश्रीस्वामिनीजीकेअंग
रूप॥ रुपयावांसोसिंगाररसमयकेसीअंगरूप॥ कोइल
आदिश्रीयमुनाजीकेश्रीअंग॥ पीतचमेलीश्रीस्वामिनी
जीकेकुचतें॥ स्वेतचमेलीश्रीचंद्रावलीजीकेकुचतें॥ मौलसरी
श्रीस्वामिनी।जीकेकेसरतेंकुंदकलीश्रीस्वामिनीजीकेदंत
तें॥ जुहीश्रीचंद्रावलीजीकेदंततें॥ मोतियाकुमारिकाकेदंत
तें॥ गुलांबांसपीतलालस्वेतगुलाबीचारोंकेभावतेंकमल
लछमीरूपश्रीस्वामिनीजीरमरमहृजकीतातेंअत्यंतप्रि
यहें॥ तुलसीश्रीस्वामिनीजीकेश्रीअंगगंधस्वरूप॥ सोनजु

ही कनेर केतुकी सेवती सदासुहागन पाडर माधुरी आदिसं
ख फूलन की मंडली द्वारा व्रज भक्तन कों अंगीकार करा व
त हैं ॥ सो वैसाख सुदि ॥ २ ॥ तांई फूलमंडली होइ ॥ वसंत हो
री में उद्दीपन भाव बहुत ॥ आलंबन भाव थी थी पहोउ ॥ औ
र फूलमंडली में चैत्र वदी ॥ २ ॥ तें वैसाख सुदी ॥ २ ॥ तांई आ
लंबन भाव सो राजभोग पीछें उत्थापन संध्या आरती प
र्यंत ॥ और अखतीज पाछें सेनको मंगला होय सा खिन
के मनोर्थ तें ॥ सो मंगला तांई ॥ सखी मंडली को दर्सन क
रि राधि की लीला अनुभव अर्प ॥ अखतीज पाछें फूल
नके गहनां भांति भांति के होइ ॥ सो सिज्या अर्प सी सि श्याम
रिस में रहे ॥ फूलमंडली में सांमिग्री गुलाबी सो ही पाछें
अधर अमृत पांनरूप ॥ चारो जूथपति के भाव तें ॥ तातें उक
महीनां राजभोग की फूलमंडली स्वांमिनी जूथपतिनके
भावतें ॥ पाछें सेन की सांगामांची पर की प्र सखी के भावतें तथा
सहचरी आदिक के भावतें ॥ पाजावतें सम सहजें कुं श्री स्वांमि
नीजी अपनी अपनी कुंजमें नित्य श्री स्वांमिनीजी सहित

पधराय के अनेक अनेक रस रूप मनोर्थ करत हे ॥ फूलन
की मंडली माला को भाव यह हे ॥ जो कोई व्रजभक्त एसे हें ॥
श्री अंग तें गुलाब की सुगंध आवत हे ॥ कोई के अंग तें म
वारा की ॥ कोई के अंग तें चमेली की ॥ कोई के अंग तें मोल
सरी की ॥ कोई के अंग तें कदंब की ॥ इत्यादिक फूल प्रभु
को धरें तो प्रभु भक्तन को मिलाय जांनि बहुत प्रसंन होत
हे ॥ तातें फूलमंडली को भाव बहुत गोप्य हे ॥ सगरे फूलन
करूप हें ॥ तातें भाव खोलिके नांही कहे ॥ श्री आचार्यजी श्री
गुसांईजी की कृपा तें ॥ रसिकजनन के हृदय में स्फुरत होइगो ॥
॥ इति श्री हरिरायजी कृत फूलमंडली को भाव संपूर्ण ॥ श्री ॥
चैत्र सुदि ॥ १ ॥ नयो वरस ताको भाव यह हे ॥ नये वरस दिन
की कुसल श्री नंदरायजी मांनत हे ॥ तातें नींव की डार धरत हे ॥
और राग अर्प ॥ बहुत सीत न होइ तो खुले बंद को वागा दिन आ
ग धरें ॥ संवतसर को दिन लालध्वजा पहरी चैत्र के महीनां में ग
उ सेग के लीये न धरीये ॥ और व्रजभक्तन के भाव में यह हे ॥ हो
री के मिस करिकें व्याह भयो ॥ पाछें दुतिया पर कों गोनों भयो

फूल· पाछें फूलमंडलीके मिसविहारनयो ॥ विरहकी सांतीभई ॥ ता
५८ तें खुलेवंदके गामामें सब अंगकों हृदयकों दर्शनकराय पहज
ताएं रहांई सद्दार हो ॥ नीवकी डारजो अब प्रतिबंधरूपरोग
कबहूं न होउगो ॥ कछ सामग्रीराजभोगमें ॥ मोतीकी आरती
होइ ॥ चैत्रसुदि ॥ ९ ॥ रामनोमी श्रीरामचंद्रजी हास्यावता
रहें ॥ तथा डंडकारन्यमें रासनकों पूर्णपुरुषोतमके आवेस
तें बरदानदीये ॥ ताकरिकें गुरुरूपभये ॥ तातेंकुमारिका यह
उत्सवजन्माष्टमी समान मानतहें ॥ तातें बडेघरमें प्रभुकों
पंचामृतस्नानकराय ॥ पाछें श्रृंगारहोतहें ॥ अब अंगपहउ
त्सवकों संपूर्णव्रतहे ॥ रामनोमीप्रभु तिहतातें जागरनमा
नें कर्तव्या इतिश्रीनंददासजीके नावतें पंचामृतस्नानसालि
ग्रामजीकों राजभोगपीछेंकरावतहें ॥ कोरीहरदीको चोक
पूरि परातधारि पंचामृतकोसाज धरि संकल्पकरिपे ॥ भ
गवतः ॥ श्रीपुरुषोतमस्य श्रीरामचंद्रप्रादुर्भावोत्सवं क
र्तुं तदंगत्वेन पंचामृतस्नानकरिस्ये ॥ यह पाठि अक्षततज
ल छोडिये ॥ तुलसीचरनारविंद परसमर्पि पंचामृतन्हवा

इये ॥ पाछें प्रभूपासपधरायपीतांवरउढाय दोइ गेरमाला
पहिराय तिलककरिये ॥ वसंताखेलाइये श्रृंगारजन्माष्टमी
कोहोइ ॥ राजभोगमें तीनकूंडा आदिक छ सामग्री तिलक
पीछें भोगमें बूंदी सक्कर पारा दही भातामिश्री खाउकों पनाफ
लाहार ॥ सिंगासनपर पुरानें पंखा धरें ॥ ऊपर पुरानें पंखा षि
चें ॥ वावधेसिज्या मंदिरमें दुतियापाटतें पंखाधरें ॥ बूंदी
कुमारिका ॥ सक्करपारा श्रुतिरूपा ॥ दही श्रुतिरूपा ॥ भात कुमा
रिका ॥ पनाश्रीस्वामिनीजी ॥ धारीकी आयतीहोइ ॥ सिंगास
नकी मंडली वैसाखसुदि ॥ २ ॥ तांई ॥ सेपामंडली तथा सा
गामांचीकी मंडली स्नानयात्राके पाहिलेदिन तांई ॥ फूलन
के आभरन नाहिं जेरानांई ॥ चंदनअंकुरी पनां जन्माष्टमी
के पाहिलेदिन तांई ॥ रथयात्रातें तरी अंकुरी पुहारा छिर
कावरथयात्राके पाहिलो दिन लों ॥ परातमें जलावजे दसमी
के पाहिलो दिन लों ॥ तहांतांई सिंगासनकों पंखा ॥ सिज्याम
दिरकों परदा दिवारी लों ॥ चैत्रसुदि ॥ १० ॥ को श्रीनाजीको उ
त्सव ॥ बडेघरमें राजभोगमें तथा गोपीवल्लभमें सामग्री ॥ में

फूल. एवसंक्रांतपुन्यकालहोइतोश्रृंगारतथाराजभोगमेंसतुवा
२५८ आरोगें॥ संक्रांसमयहोइतोसेनमेंसतुआकेलाडू॥ और
घोल्योसतुवा॥ रनामुख्यकेभाव॥ जवतथागेहूं श्रुतिरू
पाकेभावते॥ घोल्योसतुवाश्रीमहारानीजीकेभावतें॥ कूरा
कुमारिका॥ घीमेंहसनको॥ लाडूकुवरूप॥ घोल्यो
अधराम्तसतुवानांहीआरोगें॥ तहांलोंश्रीनंदराय
जीतथाश्रुतिरूपाकुमारिकाकछूलेतनाही॥ आरोगाए
पीछेलेतहें॥ औरसवनित्यकीरीतपर्वकुसलकेलीयेंदा
नकरतहें॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनकोउत्सव वैसाखवदी
११॥ ताकोभावयहहे॥ एकादसइंद्रीसाधिकाहार वासर मा
धवमहीनांवसंतरितुकृष्णपक्षश्रीस्वामिनीजीस्वरूपक्षम
कोपश्हृदयआस्थितग्यारसकोशेपेएकडाहोइसोकृ
दलात्मकरूप जुगलसरूपकेभावतेवसंतरितुभोगीहें॥ ता
तेंजुगलसरूपकोभोगप्रियहे॥ अन्यंगजन्माष्टमीको
श्रृंगारराजभोगमेंसेनभ्पाध्यकेवडा॥ धोइदारतीनकू
डामीगोसाक॥ जलेबी बूंदीसकरपारा॥ बूंदीसबकेलडु

वागहंडामेवाती॥ सिरवरनवडी॥ वासोंदी॥ खिलसारू॥ श्रीपा
डुकाजीकोउतनोहींन्यारोभोगश्रीपाडुकाजीकेआगेकोरी
हरदीकाचोकतापरदूधकेकटोरामेंगुडकेटूकडार॥ तिलि
आरिभोगधरनो॥ थारीमेंमोतीकीआरतीचूनकेदीवडा
धारि॥ तिलककारि॥ सोयमुठियावारिअपमनभक्तकीआर
तीपाछेसोयमुठियावारि॥ श्रीपाडुकाजीकीआरतीपाडु
काजीनहोइतोग्रन्थकोचारमुठियावारिआरती॥ दूसरे
दिनवहीश्रृंगार॥ कहूंश्रीपाडुकाजीकोदूधसोंस्नानश्री
स्वामिनीजीकेभावतेकाहूकोदर्सननांही॥ ताहीतेंश्रीगोवर
धनधरवैसाखवदी॥ ११॥ कोंप्रगटभए॥ श्रुतिरूपाकोवर
दांनहूंवैसाखवद॥ ११॥ कोहैतातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभू
सवअवतारमेंतेवडेहें॥ बुधावतारमेंपांडितमात्रहे॥ रिसभा
वतारमेंपांडितवेदमेंपरस्परयज्ञोरवेदकीक्रियाहूकरी॥ व्या
सावतारमेंपांडितवेदमेंपारसियाक्रिया॥ अवतारादिकजो
हारिमार्गमेंपारिरयपरंतुव्रजपतिकीलीलामेंरतिनांही॥
श्रीआचार्यजीमेंपांडितवेदमार्गकेजाननवारे॥ वेदाकि

रवस पाहूंकर्ताहरिमार्गअवतारसगरेमेंपरिचयकेवलव्रजपाति
६० केनांवमेंरातियहसवींपरनकोईआगेभयोनआगेकैहे॥ना
तेंश्रीआचार्यजीकेवचनामृतकेअनुसारहीकरनी॥तातेंमु
ख्यवैस्नवसोईहे॥जोपुष्टिमारगमेंसरनकैश्रीपूर्णपुरु
षोत्तमकीभक्तिकरें॥असोअवतारकौकरे॥तोऊबाधक
हें॥लीलातेंछूटिमुक्तिहोइ॥सोमुक्तिपूर्णपुरुषोत्तमकी
नांहीजोअंतर्गृहगतकीनांई॥ताहूमेंफेयोग्यनहोइजो
असुरनकोदीनीसोईमिले॥तातेंअवतारादिकनकेस
रूपनिरूपनकरनअर्थश्रीपूर्णपुरुषोत्तमनेंश्रीआचा
र्यजीकोप्रगटकराए॥तबसारस्वतकल्पकीरसमईलीला
रसमयश्रीकृष्णभक्तिनकीभक्तिकोंप्रकाशकीए॥श्रुतिस्वा[illegible]मा
रुकांकेअर्थ॥ब्रह्माकेमहीनांकेतीसादिनतामेंकल्प॥ऊहे
तामेंद्वादसोंकल्प॥१२हें॥सारस्वतहें॥ताहीमेंपूर्णपुरुषो
त्तमकोप्रागट्यहे॥सोश्रीभागवतकीलीलासारस्वतकल्प
केअनुसारहे॥तातेंपुरुषोत्तमकीलीलारसदोयसंयोग
वियोग॥सोदोऊकोदानश्रीआचार्यजीदोऊमंत्रप्रगटकीए॥

नामअष्टाक्षरताकेजपेतेंसंयोगरसहोइ॥पंचाक्षरकेजपे
तें॥विप्रयोगरसकोअनुभवहोइ॥याप्रकारश्रीआचार्यजी
प्रगटेश्रीठाकुरजीकोतापात्मकविप्रयोगात्मकभावात्मक
मुखारविंदमेंसाक्षातरसरूपअग्नितारूपश्रीआचार्य
जीप्रगटे॥पंचाध्याईमेंमुख्यसोकहे॥सुसाधुक्तबैविशुधा त्यं
पुसाप्पवृंतातेंमुखस्वरूपप्रगटयहोहजस्वीकेभावतेंसेवाप्रग
टकीए॥पंचाध्याईमेंमुखारविंदमेंरसह्वो॥सोवेनुमेंक
रके॥सगरेव्रजभक्तनकोंप्राप्तभयोसोरसरूप॥श्रीआचा
र्यजीहे॥वेनुरूपश्रीगुसांईजीवेनुमेंसातछिद्रयातेंश्रीआ
चार्यजीकेमुखारविंदमेंरंध्रसातहें॥इनेंत्रहें॥फूंकिदैनासि
काऐकमुखरव॥तातेंसातबालकप्रगटे॥अनेकतानतरंगरूप
सगरे॥बालकआपनाव्रजमेंइंद्रकोपसमयश्रीठाकुरजीगिर
राजउगाए॥तबआपनेंनिजभक्तनकोस्वरूपानंदकोअनुभ
वकराए॥तासमयगिरधरनसरूपश्रीगुसांईजीहे॥सा
तादिनलोंरसदानकराए॥तातेंसातादिनकेआनंदरसरू
पसातबालकहें॥सोसातबालकआपनेंआपनेंभावसोंआ

पुनें घरके बैसवकेरांसदांनकराबतहैं ॥ तथा पंचाध्याईमें प्र
भू प्रगटे ॥ तवब्रजजनन्ततनके सातभावभए ॥ काचित्करांवुजसें
सौरिजमूहेंजलिनामुद्राकर पकरे सुद्धसात्विक ॥१॥ काचित
हैं ॥ धारतहाहूंमंसें चंदनकों षितंप्रभूकी भुजासुगंधरूप
अप्पने कांधे पर धरतभई ॥ सुद्धराजस ॥२॥ काचिदंज
लिनांगृह्णातन्वी तांबूलचर्वितंकोई चर्विततांबूललेतीए
राजससात्विक ॥३॥ एकातदंध्रिकमलं संतप्तास्तनयोर
धात ॥ प्रभूके चरणस्तनपर धरितनताप मिटाए ॥ राजस
तांमस ॥४॥ एका भृकुटीमाबध्य प्रेमसंरंभविह्वला ॥ घूंघरवे
कें ध्नंतकटाक्षैः संदष्टदसनच्छदा ॥ एकभृकुटी वांधिलीलो
करि प्रेममें विह्वलद्हें नेत्रके कटाक्षचलावतहें ॥ हुमको
छोडिके गोप धारे लक्ष्मी पास सुद्धतांमस ॥५॥ अपरानि
मिसद्दृग्भ्यांजुषाणातन्मुखांबुजं आपीतम पिनातृप्यत
संतस्तच्चरणंयथा ॥ दोऊनेत्रनतें मुषारविंदकोरसपानक
एकटकदेंसपूर्नहोतभई तवचरणपकरतभई ॥ सात्विकतां
मस ॥६॥ तंकाचिन्नेत्ररंध्रेणहृदिकृत्यनिमील्यच ॥ पुलकां





गुह्यास्ते योगीवानंदसंप्लुता ॥ नेत्रकेरंध्रद्वारा
सर्वांगसुंदरताहृदयमें धरियोगीकी नाईं हृदयमें राखि
नेत्रमूंदतभई ॥ यह निर्गुण ॥७॥ यहसात भावकेसातही
बालक ॥ किवाडमंदिरकेसोपलकहेंकमलचोकब्रजरू
प ॥ जगमोहनरमणजी ना ॥ सिज्यामंदिर श्रीस्वांमिनी
जीकों निकुंज ॥ निजमंदिर श्रुतिरूपाको निकुंज मंजू
ज श्री यमुनाजीको निकुंज ॥ तहांतें सब अपारमार्ग ॥ म
निकोठा कुमारिकाकों निकुंज ॥ इत्यादिकभावतें यह
पुष्टिमार्ग हैं ॥ सात घूंट भरिपीजें प्रसिद्ध मातचरणबु
लाए ॥ परंतु मुखमें सरस्वतीरूप श्रुतिरूपा कहतहें ध
ह धर्म सातमें धर्मीरूप सातोबालकके सरकों पानकी
जें ॥ कुमारिकाकोरस श्रीयमुनाजीकोरस श्रुतिरूपाको
रसहेंहें ॥ संयोग वियोगश्री यमुनाजीको संयोगएक
रसताको मिलिसातोरसपीजें ॥ अथवा पंचाध्याई में
सातभावनएसोरसपीजें अथवा गोवर्द्धनधरें तवसा
तदिन ॥ सोसातप्रकारकोंरसदांनकी ए ॥ सोसातोरसपी

मेंघ
१६२

जैं अष्टसखा गोविंदस्वामी अंतरंग नीसषी हैं ॥ सो श्री
गोवर्द्धन धरसों प्रार्थना करत हैं ॥ सात बालकन के रस
कों पान कीजें ॥ इत्यादिक अनेक भाव हैं श्री स्वामिनी
जी श्री वृषभान जी के घर हैं ॥ श्री ठाकुरजी श्री नंदरा
यजी के घर हैं दोऊ कें ताप निवारन अर्थ ॥ श्री चंद्राव
ली जी मनोरथ करी यों अपने घर ॥ तथा श्री स्वामिनी
जी के घर आई तब श्री स्वामिनी जी कहें कछू उपाय क
रो ॥ तब कीरती जी वृषभान जी सों कहें ॥ श्री नंदरायजी
कों परिवार सहित न्योंतो करो ॥ तब चैत्र, वैसाष, तथा आ
श्विन, कार्तिक, यह दोय महीना वसंत ॥ उह दोय महीनां
सरद इनमें फूल बहुत होत हैं ॥ रसरूप रितु हैं ॥ सर
द की रास यह वसंत की रास ॥ ताते मुकट बहुत धरत हैं
॥ तहां श्री नंदरायजी कों न्योंतो कियो द्वार पर पौरे अ
छत धरे ॥ चांवर अक्षत रूपा रंग पीरो श्री स्वामिनी जी कों
भावता कों यह अर्थ ॥ बसीकरन मंत्र रूप चांवर देषि कें
सब कों मन फिरें जो वृषभान जी के घर जैये ॥ छप

न भोग की रीत चोकी ॥ १ ॥ श्री यसोदा जी के बैठिवे कि
गादी धरि ऊपर लहंगा अतलस कों ॥ तामें लाल डोरी
परी होइ सो धरि केसरी साडि चुनि कें धरीयें ॥ चोली के
सरी तथा लाल धरीये ॥ अनवट, बिछिया, जेहरि, पग
पान, घुंघरू, टिका, हार, पदिक ॥ कंठश्री, दुलरी, ढोलचोटी,
बाजुबंद, कंकन, पहुंची, गजरा, रतन चोकी मुंदरी, तथा आ
रसी, टीकी, काजर, सिंदूर, महावर, श्रृंगार करि फूलन की
माला पहिराई हैं ॥ नमस्कार करिकें वसंत खिलावें के
सरि, चोवा, गुलाल, अबीर, हरदी कों पांनी, सुगंध सहि
त केसू को फूलन को रस, तासों खिलाइ ॥ समधिन सों स
म चोरी मिलत हैं ॥ श्री यसोदा जी की गोद में दछिन प्रभु
वाम भाग श्री स्वामिनी जी पधराई यें स्वरूप प्रसिद्ध न
होइ तो तनी यां केसरी, पाग, ओढनी, माला पहिराईये
चोली स्यांम, साडी केसरी, छोटी घाघरी, आभूषन ध
रियें ॥ मंदिर में दछिन दिस पधराय भोग आवें ॥ एक
चोकी पर याही रीत रोहिनी जी कों सिंगार करि वसं
त खिलाय श्री बलदेव जी दछिन दिस तनी यां, पाग,

१६३ ओढनी धरिकें भोग आवें ॥ श्री यसोदाजी के दछिन दि
स विराजे ॥ चोकी ॥ १ ॥ श्री यमुनाजी की ॥ साडी केसरी,
चोली स्यांम, लहगा लाल, माला पहिराय वसंत खिला
य हरदी षेले ॥ पाछें भोग श्री यसोदाजी कें वांम भाग ॥
निस्य जी लाबारे भक्त सब श्री महारांनी जी में आए दो
ई चोकी पर साडी, चोली, धरें अतिरूपा कुंमारिका कें,
भाव सों वसंत खिलाइ हरदी षेले ॥ पाछें भाव सों पनवा
रे में भोग आवें ॥ पाछें मंदिर की तिवारी पर जंवो किछो
ना बिछाइ गुलाल हरदी छांटें सगरे गोप गोपी लक्ष
के भाव सों पनवारा बिछाइ ॥ टोकरा में भोग आवें ॥ बस
त हरदी षेलें पाछें सांधिया हरदी को करि कें सब ओर,
च पठी याथार धरे ॥ पकवांन, षीरिसा कादिक, पांना
दिक, मेवा मिठाई, पनां, वासोंधी, जल निवनि आवे ॥ छ
पन ना तित घां ढिन होइ ॥ दोइ घरी पीछें आचवन मु
ष वस्त्र वीडी अरोगाई यें श्री यसोदाजी की चोकी आ
गें मोतिकी आरती वीरीतो जी करें मुठिया वारि कें पा
छें मंदिर की तिवारी में दछिन दिस श्री नंदरायजी की

चोकी गादी पर धोती केसरी, कोर की पाग, तोरा केसरी
उपरनां, तथा केसरी कोर होइ माला पहिराय सुगंध ल
गावे वसंत खिलाय हरदी षेलें ॥ पाछें व्रषभांनजी की
चोकी पर दोउ ठोर भोग आवें ॥ सगरे गोपन के बराब
र वारे तिवारी में बिछात ॥ ओर गांव के गोपन को चो
क में बिछात ॥ तहां वसंत हरदी चलि कें तिवारी में प
नवारा पर भोग आवे ॥ तथा टोकरा हूं धरे ॥ चोक में प
नबास पर टोकरा में भोग धरि दोइ घरी पाछें आच
मन मुषवस्त्र वीडा धरि पाछें पहिरावनी होइ ॥ सा
डी ॥ १०० ॥ उपरना ॥ १०० ॥ करें हें ॥ सो सेवकन को देत हें ॥ वी
डा ॥ ५०० ॥ सो तामें १०० ॥ तिबारी में ॥ चार से चोक मे ॥ पा
छें सैया सिद्धि करनी सैया तिन मंदिर में बिछावनी
सिंहासन ते दछिन दिस ॥ श्री यसोदाजी ॥ १ ॥ श्री रोहि
नीजी ॥ १ ॥ श्री यमुनाजी ॥ १ ॥ यह तीनो पास तीनो ठौर सि
ज्या भोग धरियें ॥ सैया ॥ १ ॥ सिज्या मंदिर में जहां नित्य
विछत हें ॥ तहां नयो सब साज करनो ॥ तापर श्री ठाकु

रजी श्री स्वामिनी जी सिज्या भोग माला बीडा चोपड़
द्वार पर टेरा ॥ सिंहासन के वाम भाग एक सिज्या श्री यमु
नाजी की तहां सिज्या भोग ठेरा को उ देषे नांहीं एक एक
की सिज्या को उ देषे नांहीं ॥ ताही पास दोय सिज्या श्रु
ति रूपा कुमारिका की टेरा जो जगह को सो कार्य होइ
तो करे नांहीं तो श्री यमुनाजी की दोय सिज्या में आ
य गई ॥ मंदिर की तिवारी में श्री नंदरायजी की सिज्या
दछिन दिस ॥ एक सिज्या बाम दिस व्रषभांनजी कीर
ती जी सिज्या भोग माला बीडा सो स्थापन समय नि
कसे ॥ चोकी आगें सैंन भोग आवें ॥ इहां एक दिन व
ह भाव की सूचना ॥ उहां श्री व्रषभांनजी चाले को भाव
ते दिन ॥ ध ॥ पांहुने राषत हैं श्री नंदरायजी आवें तब
व्रषभांनजी करे ॥ व्रषभांनजी आवें तब श्री नंदराय
जी करे भोजन समय गारी गावें निस्पली जावारे को
हूं कुंज में रमण हैं ॥ श्री नंदरायजी जानें पुत्र भीतर श्री
यसोदाजी पास हैं श्री यसोदाजी जानें श्री नंदराय

जी पास हैं ॥ याही प्रकार गाय चरावन जात हैं ॥ तब श्री
गिरिराज की कंदरा में ॥ सांकरी षोर में ॥ गह्वर वन में ॥
संकेत में पोढ़त हैं तहां ॥ तहां ललिता, विसाषा, चंद्रभ
गा, स्यामा, भामा, कुसमा, तुलसी, माधवी ॥ ८ ॥ अष्टसखी
श्री स्वामिनी जी श्री चंद्रावलीजी ॥ पाछें सैंन आरती
पाछें न्योछावरि विदा होइ ॥ श्री नंदरायजी को श्री ठा
कुरजी को श्री बलदेवजी को मुषमांडें ॥ बरस में दोय
बार यह उत्सव आवती जु पहिलें चैत्र बैसाष में ॥ स
हां दिवारी पहिलें आसुज, कार्तिक बसंत में व्याह हो
री को है ॥ सरद रितु में गोना है व्याह के भाव सों भोजन
गोना के भाव सों भोजन पाछें निकुंज में श्री चंद्रावली
जी पधराये हैं जुगल सरूप को आपनी आपनी कुंज
में पधराय जत्त अपनों गोंना करत हैं ॥ माटी के पात्र
श्री यमुनाजी में जाइ तप्यात लावनदी में जाइ ॥ यहर
स के पात्र श्री यमुनाजी हैं ॥ अक्षे तीज बैसाष सुदी
३ ॥ अभ्यंगन ये ष छोडा बीच में गरमी पडे तो रा

पहिले मलोंमा पाछें पुराने पिछोडा धरे केसरी कोरके स्वे
१ ईं पतकुलह पिछोरा ॥ स्वेतके सरी कोरकी साडी चोली
अरगजाई ॥ लालजी कों केसरी कोरकी कुलह औ
ढनी राजभोगमें सेव आधिकें बडा मीठे साकत्ती ॥
नकुंडा ॥ चोकी परनयो पंषा चंदन धरि अधिवासन
करीए ॥ भगवतः श्री पुरुषोत्तमस्य चंदनलेपनार्थं चं
दनस्याधिवासनं करिष्ये ॥ यह कहि जल अछत छो
डिये ॥ धूपदीप तुलसी संषोदिक करि कूराकी कटो
री भोग धरीयें आरती घंटा बजाइ करीयें मालाधि
टावाजत चंदन धरे एक गोली हृदय पर दोय दोय
गोली हस्तन पर दोय गोली चरण पर या भांति पहि
रायनये पंषाकी जें ॥ दोय पंषा गादी पर पीछें धरें ॥
कुंजादक्षिन दिस सिंहासनके कूंजा करवा सिज्यामें
भोग धरिए घोल्योसतुवा दही भातपना भिश्री षांड
कों आगें जलकी परात ॥ धूपदीप तुलसी संषोदिक
मोतीकी आरती रूपेकी दीवडा धरि करीयें अधि

है विकग्रीषम रितु आई श्री स्वामिनीजी कें संगम
में प्रेमकी लहर उठी ॥ सो दूसरे स्वरूपको ज्ञान भूल्यो
विरह प्रगट भयो ॥ तब विरहताप निवृत्तिकरना
र्थ सषीजननें उपायकीयो हैं चंदन घसिकपरामें
बांधि गोली करीयें ॥ श्री स्वामिनीजी बिराजत है
सुतो दोय गोली चरनारविंद पर एक हृदयमें धरि
यें ॥ ऊपर यह भाव श्री यसोदाजी वात्सल्य भावसों
चंदन पहिरावत हैं ॥ ग्रीषम जानिकें दही भात पना
पंषा करत हैं ॥ उस कालमें बाहर सगरो विरह प्रगट
भयो तब कहा ज्ञाते उलटो प्रभूकों सीतल करनो
परयो ॥ सीतकालमें भीतर विरह बहुत सो जताइबे
के लीयें बाहर बहुत बाती प्रगट करिकें प्रभू परवा
रत हैं ॥ आभरन मोतीके सीतल याते जो स्वामिनी
कें विरहमें मोती जरिकें चूनाकी नांई भए ताते मो
ति पहरिसी तल कीए ॥ प्रभूके हृदयमें गोली चं
दनकी स्वामिनीरूप बामहस्त पर श्री यमुनाजी

अन्द्रेद छिनहस्तपर श्री चंद्रावलीजी बांम चरणारविंद
१ दूई पर कुमारिका दास आवतें ॥ दछिन चरणपर समस्त
व्रजकी स्वांमिनी ॥ श्री स्वांमिनी जी के चरणपर दोय गो
लो श्रुतिरूपा कुमारिका चरणपरी विरहबस होइजो
अब तुम्हारी आरति है हृदय में प्रभु बिराजें ॥ या भाव
सों चंदन धरिये ॥ पांच ॥ ५ ॥ गोली धरि पंच प्राणकी
पांच तत्वकी सी तबलार सरूप होतहें ॥ छोटी पंषी दंड
कारण भावसो अंचल करतहैं डांडी पंषाकी भक्तनकें
हस्तहें ॥ आलहरे पिरें स्यांमरंगसों चूरी पहिरेहें ॥ ब
डपंषा मालरिदार श्रुतिरूपा श्री चंद्रावलीजी है ॥ पं
पनो अंचल करतहें जाली दारता में अबरषनी चम
कतहे ॥ सो श्री यमुनाजी के भावतेहे ॥ सो कके पंषा मे र
समसों गूंथ्यो श्री स्वांमिनी जी के भावतेहें ॥ षजूरकें
बांसके ताडके गोलचोषूटे सगरी स्वांमिनी ललिता
दिक सषिके भावतेहें ॥ सिंघासनपर दोय पंषाहें ॥ सो
श्रुतिरूपा दछिन कुमारिका वाम जुगलसरूपकों अं

चलकरतहें ऊपर षिचेवा पंषा श्री यमुनाजी की जह
रिरूप सबनकोंसी तलकरतहें ॥ उस्सवकें भोगसों रम
णपीछें अनुपांन हें ॥ दही भात जो रामूं ज्यो श्रुतिरूपा
के भावतें ॥ सिषरिन वडो सिषरन भात श्री यमु
नाजी कें भावतें ॥ सतुवा घोस्यो कुमारिकाके भावतें
पना मिश्री को श्री स्वांमिनी जी ॥ षांडकों श्रुतिरूपा
कें भावतें ॥ मिरचहे सो सितकार हें तामसी कोइ भा
हवीसी तकार सानुकी को ॥ कपूर सी तकार राजसी कों
आचमन श्रुतिरूपाको अधररस ॥ मुषवस्त्र श्री
स्वांमिनी जी को अंचल ॥ बीडा ध ॥ चारो केच वितती
वुल अभ्रसती मोतीकी हृदयरूप ॥ ता दिनतें मांटीके
कूंजा करवा धरतहें ॥ श्रुतिरूपाको मनोरथहे ॥ चंदन
सिंघासनपर सिज्यापर अरगजाकी कटोरी धरतहें
दोऊ समय चंदन श्रुतिरूपा केसरि श्री स्वांमिनीजी
॥ रंच चोवा डारतहें श्री यमुनांजी ॥ रंच कस्तूरी सो ऊश्री
यमुनाजी अरगजा कुमारिका ॥ बरास श्री अंगकों

अरि गंध ॥ तथा हास्यरूप ॥ गुलाबजल भक्तनकों श्रमजल
१६७ याप्रकारसों भक्तनकों श्रृंगराग प्रमुखे पनकरि बि
रहसी तन्वता करतहें ॥ एकदिन चंदन कंठते कटिप
र्यंत बहुत गरमी होइ तब पहिरें ॥ प्रभू विरहसों देहानु
संधान भूलि स्वामिनी अंगमें बेखिल होइ स्वामिनी रू
प प्रभुनए ॥ उस्थापनसमय दोऊ पनादार भीजी फला
दिक विहार पीछें अनुपान ॥ वर्षा ॥ ईश्वर्य ॥ सरद बी
र्य ॥ हैंमंत जस, सिसिर श्री, वसंत ॥ ज्ञान ॥ ग्रीषम वैरा
ग्य ॥ यह षट्रितु षड्गुणकों धर्मी दोऊ स्वरूप अंगी
कार करतहें अष्टसखी जकों विरहकें भरते गिरिराजते
निकसि मंदिरमें बरसानें सनमुख प्रभु विराजें ॥ कपू
रकों मदिस कीए ॥ स्वामिनीजी के भावते आगें रखि
ग राददछिन भाग सोंहें के भावसोंहे ॥ याप्रकार अष्टसखी
जकों भाव ॥ नृसिंहचतुर्दसी वैसाखसुदी ॥ १४ ॥
को अलंग केसरी कोसकुलह पिछोरा ॥ लालजीकों
केसरी केरकी कुलही ओढनी तथा अरगजाई ॥ रा

जभोगमें सेबती नकुंडा ॥ छाछिके वडा मोहनथाल ॥
भोगके समे पंचामृत सिद्ध करिकेरी हरदिकोचोक
पूरि संझा आरती पीछें श्रृंगार वडो न करें ॥ चोक पूरि
तापर पराल धरि संकल्प करीजें ॥ नगबलः श्रीपुरुषो
त्तमस्य श्रीनृसिंहप्रादुर्भावोत्सवं कर्तुं तदंगत्वेन
पंचामृत स्नान करिष्ये ॥ जल अप्रछल छोडि पाछें ति
लक सालिग्रामकों करि प्रभुपास वेठारिकें पीतांव
र माला दोऊनकों पहिराय दोउकों तिलक कीजें ॥ व
सीत खिलावें ॥ घोस्योसतुवा दही भात मिश्रीकों प
नां फलादिक बूंदी सकरपारा ॥ आरती मोतिकी रूपे
कीदीवा धरि करिए ॥ सेनभोगके संग उत्सवभोग आ
वें ॥ नृसिंहजी कौस्तुभावतार हें ॥ नृसिंघजी प्रह
लाद भक्तकों सर्वांग प्रीतिसों चाटे ॥ तातें व्रजभक्त य
ह उत्सव प्रीतिपूर्वक मानतहें ॥ जेसें प्रह्लादके स
कल दुख दूरि कीए ॥ तेसें हमारे प्रतिबंधरूप दुखकों
दूरि करि सर्वांग रमण करि अंगीकार करो तातें दही।

अहले भात सखिरन भात सखिरन बडी घोरयो सतू आमरस
१६८ श्री स्वामिनीजी ॥ सखिरन भात सखिरन बडी श्री
यमुनाजी ॥ दही भात श्रुतिरूपा भात कुमारिका श्री गो
वर्द्धनधर गिरिराज पधारे ॥ सो नित्य सिद्धा के मनोर
थतें दूसरो राजभोग ॥ तेहरो छिरकाव सांनया त्रातां॰
ई श्रलित उस काल विरह को न रहै ॥ जेष्ठ सुदी॰
१॰ ॥ श्री गंगाजी को उत्सव ॥ वरसदिनमें दसहरा ॥ ३ ॥ चै
त्र सुदी ॥ १ ॥ दशमी तांई ॥ जेष्ठ सुदी ॥ १॰ ॥ आसुज सुदी
१॰ ॥ तातें जेष्ठ कों श्री यमुनाजी कें भावतें ॥ आसुज कों
देवी पूजन ह्वाँ श्री कुमारिका श्रुतिरूपा को चैत्र कों त
षीजन के भावतें प्रभु कों अभ्यंग श्रृंगार केसरी तथा॰
अरगजाई पाग तथा कुल्लह पिछोडा ॥ एक चोकी पर गा
दी धरि श्री यमुनाजी के स्वरूप की भावना करि दर्पन॰
में दूधसों न्हवाइ अंगवस्त्र करि लहगा लाल अतल
स को ॥ साडी केसरी चोली लाल तथा केसरी ॥ फू
लन की माला ठीकी काजर सेंदूर ॥ बेनी आभूषन जो

व लिआवें पीछें गुलाल के सरि चोवा अबीर सों खि॰
लायकें प्रभु कों भोग श्री यमुनाजी को न्यारो भोग धरि
ए ॥ छाछि के वडा तीन कुंडा मोहनसार सेव सिखरन॰
वडी ॥ पूरी सुहारी पीरी स्वेत ॥ दही भात ॥ गुड की तवापू
री दही भात सेव के लड्डू आधा जा दूधसं धोनो मांठसी
रापनां मिश्री को ॥ राजभोग पीछें मोति की आरती॰
सिन्या मंदिर में रहें मनोर्थ करें तो रात्र को हू रहें नांहीं
तो सेन आरती पर्यंत रहें ॥ पाछें श्री वल्लभकुल कों
वस्त्र आभूषन देइ तत्पा श्री यमुनाजी में पधरावें ॥
॥ भागीरथ श्री गंगाजी को ल्याए ॥ आगें आप पीछें
श्री गंगा हरिद्वार में जान्हरिषि तपस्या करत हुते ॥ सोर
सुनि क्रोध करि पी गए ॥ पाछें दक्षिन कर्ण तें वैसाख॰
सुदि ॥ ७ ॥ को प्रवाह निकस्यो वैसाषसुक्कसप्तम्यां जन॰
न्हुनाजीन्हवी स्वयं क्रोधात्पीता पुनस्त्य[illegible]कर्ण क्त
रंध्रात्तु दक्षिणात् ॥ १ ॥ पाछें जेष्ठ सुदी ॥ १॰ ॥ को प्रयाग में॰
श्री यमुनाजी को संगम भयो ॥ प्रथम वामनजी के च॰

यमुना रससंबंधतें ॥ इतनोइ महात्म्य हुतो सा राजन दर्सनो
१९९ देवब्रह्महत्यापापहरनी ॥ अब श्री यमुनाजी के संग
मते मुरारिपु श्री रसचंद्रकी प्रियतमा भुकांमई अध
खिचल ऐश्वर्य श्री यमुनाजी श्री गंगाजी कों दान करतन
ई ॥ तातें महाउत्सव मो नियें ता गंगा नदी नाई भगवदी
यत्व कों दान श्री यमुनाजी प्रसन्न होइ के देइ ॥ तातें
श्री यमुनाजी के शृंगार आवस्यक रिये ॥ श्री गंगा
के कीर्तन गाइये ॥ ऐसी श्री यमुनाजी कों नमस्कार
करत हें ॥ यमुनायै नमः ॥ जाके नाम तें जमजातना
निवृत्ति होइ जाइ ॥ रसायै नमः ॥ प्रभु को नाम र
स श्री यमुनाजी को नाम रसा यह प्रियापदनी
हें तातें रसा कहें ॥ २ ॥ रससमायै नमः ॥ ३ ॥ रसके
समान हें जैसें रस कर्तुं अकर्तुं अन्यथाकर्तुं सर्व
सामर्थ्य ॥ तैसें श्री यमुनाजी हें षड्गुन संयुक्त धर्मी
३ ॥ रसरूपायै नमः ॥ ४ ॥ रसहूं स्यामहू कें अपनो
रस छिपायो ॥ तैसें ही श्री यमुनाजी स्यामरूप हें

जो तरस सगरी लीला निकुंजादिक हें सो काहूकों दर्सन
नाहीं ॥ ४ ॥ रसरसात्मिकायै नमः ५ ॥ जैसे रसरसात्म
कहें ॥ तैसेंई श्री यमुनाजी हूं रसात्म कहें नंदरायकुमा
रकी नाई ॥ ५ ॥ रसलीलामृतजलायै नमः ६ ॥ व्रजभ
क्तन सहित रासादिक लीला करत हें ॥ तब श्रम द्वारा
जो तरतें रस निकसत हें ॥ सो जलजल डाके मिस सगरी
लीला रसकों अमृतजल श्री महारानीजी में हें ॥ या
भावसों जलपान करे तो फलरूपनो तननुचारी रहोइ
ई ॥ रससंबंधकारिण्यै नमः ॥ ७ ॥ श्री यमुनाजी में जो
पदारथ हें सो प्रभु अर्पित हें ॥ तातें जल पान करिए ॥ त
व रससंबंध कराय भावसों पाछें प्रसादी जल पीजे
तो श्री यमुनाजी वेगे प्रसन्न होइ अथवा व्रजमें जल
हें सो श्री यमुनाजी संबंधी हें ॥ तिनतें सींचे फल मे
बासां मिश्री सब प्रभुसंबंध कराय के लीजें ॥ ७ ॥ रस
प्रियायै नमः ॥ ८ ॥ रसकी प्रिया हें ॥ सर्व भक्तनके अ
नुकूल ॥ रसमुख्यरससंगमदायिन्यै नमः ॥ ९ ॥ श्रीह

यमुनासबकोमुख्यरसस्वामिनी अधरामृत तिनसोंसंगम
१७. हें ॥ श्री यमुनाजलमें सगरे भक्तनकें अधार प्रभुकें अ
धरामृत रससोंसंगमहें ॥ ८ ॥ रसक्रीडाश्रयायै न
नमः ॥ ९ ॥ रसक्रीडाकरतहें सो श्री यमुनाजी कें आ
श्रयतें ॥ जैसें पंच अध्याइमें कहेहें ॥ योगमायामुपा
श्रितः ॥ तैसेंही श्री यमुनाजी जलस्थलक्रीडासा
मग्री उद्दीपन भावकी प्रगट करतीहें ॥ तब प्रभुक्री
डाकरतहें ॥ १० ॥ रसपदवीप्राप्तिकारिण्यै नमः ॥ ११ ॥ ये
रसकी पदवीमें प्राप्ति करावनो भक्तकों यही इन
नको कामहें ॥ श्री यमुनाजी कें आश्रयतें प्रभु इनकें
तथा सगरे व्रजभक्तनकों मिलावतहें ॥ ११ ॥ रस
स्थितायै नमः ॥ १२ ॥ श्री यमुनाजी में रसकी सदा स्थि
तिहें ॥ रसमें श्री यमुनाजी की सदा स्थितिहें ॥ एक
क्षन वियोग नाहीं हें ॥ १२ ॥ रसवासहृदयायै नमः ॥ १३ ॥ या
श्री यमुनाजी कें हृदयमें रसवसतहें ॥ तातें श्री य
मुनाजी कें हृदयमें यही रहतहें जो सगरे व्रजभक्त

नके हृदयमें रसकों बसाइये या कारिकें प्रसन्न
होइकें श्री रस अपनें हृदयमें श्री यमुनाजी कों
बसाएहें ॥ १३ ॥ रसकामुकायै नमः ॥ १४ ॥ एक रसही
की सेवाकाममें तत्परहें ॥ तातें श्री यमुनाजी के आ
श्रयतें सगरो जो किकवे दिककाम छूटिकें ॥ एक रस
की सेवामें तत्पर हेजाइ ऐसो अर्जो किक सामर्थ्यको
दाताहें ॥ १४ ॥ रसप्रियाप्रियायै नमः ॥ १५ ॥ रस
की प्रियाजो श्री स्वामिनीजी आदिरूप निरूपाकुमा
रिका सर्व व्रजभक्त तिनहूंकी प्रिया श्री यमुनाजी हें ॥
सबनके सुखदाता श्री यमुनाजी हें ॥ १५ ॥ रसस्था
पिभावसमुद्भवायै नमः ॥ १६ ॥ श्री स्वामिनीजी आ
दि सगरे भक्तनमें संयोग वियोग दोऊ भावहें श्री य
मुनाजीमें सदा संयोग स्थाई भाव एक रस अखंडली
ला प्रभु विहार करतहें ॥ जहां श्री यमुनाजी को दर्सनक
रतमात्र यह भाव हृदयसों उमगतहें ॥ प्रभु विहारक
रतहें भावको प्रकास करतीहें ॥ तातें पंचाध्याइमें क

यमु हैं पुनः पुलिनमागस्यका लिख्यो॥ लसजावनो इति
२० ॥१ हैं॥ लसैक मिलनस्थानभूतायैनमः॥१७॥ लसके
मिलनकोंस्थान श्री यमुनाजी हें॥ तामें यह संदेह हो
इ जो श्री यमुनाजी तोकोइक देशमें हें॥ तहां श्री आ
चार्यजी कहे हें॥ विशुद्धमथुरातटे॥ सकलगोपगो
पीवृतेरूपा जलधिसंश्रिते, व्रजमें तीन प्रकार
सो श्री यमुनाजी हें॥ मथुरातट विश्रांत परसों
न जलपांनतें जीव शुद्ध हे जाइ॥ अनेकपापप्रति
बंधरूपतें॥ सकलगोपगोपीवृतें॥ श्री ठकुरानी
घाटपर गोपगोपी प्रभुसों आवत मिले हें॥ तातें का
हे श्री गोकुलके निकट वसतहें॥ लहरनकी धनि श्र
बें॥ तातें श्री ठकुरानी घाटपर मिलनकोंस्थान हे
॥ तातें भूतजो प्राणी हें जो व श्री गोकुलसंबंधी जी
वाके नावसों श्री ठकुरानी घाटके आश्रयतें प्रभु
सों मिलाप होइ॥१७॥ लसमुख्यार्घ्यैनमः॥१८॥
और देव पूजनतें लौकिक वैदिक अर्घ प्राप्त हें प्रभु

नांहीं और श्री यमुनाजीके पूजनतें मुख्य अर्घ फ
लरूप श्री लस प्राप्त होतहें॥ यासमान और अर्घ को
ई नांहीं हें॥१८॥ लसगोपीसहचर्यैनमः॥१९॥ श्री य
मुनाजी लसकी हूं सखी हें और गोपी व्रजकी स्वामि
नी हूं सखी हें दोऊ जुगलसरूपकी सेवामें सहचरी हे
इसगेराकार्यमांनादिक छुडावतहें॥ स्वामिनीरूप
आपहें तेऊ सखी भावमें मगनहें॥ तातें सबनकों प्रि
यहें॥१९॥ लससन्मानवर्द्धिन्यैनमः॥२०॥ लसके स
मांनकों वढावनवारीहें॥ जो भक्तके मनमें रंचक प्र
भुपर दोष होइ तौको मिटाय भावजो प्रीतिकी वढा
वनवारी हें॥ श्री यमुनाजीके आश्रयतें श्री लसमें प्री
तिकी वृद्धि दिनदिन अधिक होतहें॥२०॥ लसकार्यप
रायैनमः॥२१॥ श्री लसको कार्य यहजो भक्तनकों स
दा सुख होइ॥ ऐसे कार्यमें तत्पर हें के व्रजभक्तनकों
मिलाप करावतहें॥ निःसाधनजीव हें तिनकों श्री ठ
कुरजीसों मिलावतहें जो वस्तु प्रभु विचारतहें भक्त

यमु नकोंदेनकोंसोश्री यमुनाजीदेकें श्री रसकोंप्रसंनक
१७२ रतहैं॥ जलतें रसकें भारजहैं सोसब श्री यमुनाजी
हूंकरतहैं॥ भक्तनके दुःखदुरिकरनो॥ दुष्टनकोंमारनों
पापप्रतिबंधरूपनिवृत्तकर्त्ताहैं॥२१॥ रसलीला
स्थलप्रसिद्धिकायैनमः॥२२॥ श्री रसकीलीला
स्थलजोश्रीगोकुलगिरिराजवृंदावनचीरघाटठो॰
रठौरस्थलसुखस्थली तासोंमिश्रीकीसिद्धिकर्त्ता
हैं॥ जहां जहांश्री रसकी लीलास्थलहैं तहांतहां
कुंडहैं कूपहैं वृक्षादिकहैं रजमें मिलिकें श्री यमुना
जी विराजतहैं॥२२॥ रसक्रीडाकुंभादिपुत्रायैन कु
मः॥२३॥ श्री रसव्रजभक्तनके संगरास विहारक
रतहैं॥ पाछें जलविहारमें अंगरागकेसरकुंकुम
सबश्री यमुनाजीमें रहतहैं॥ फूलमालाइत्यादिक
सोंश्री यमुनाजी मिलिकें एकरसह्वै रहीहैं॥२३॥ रस
रसांतरायैनमः॥२४॥ श्रीरसकोरसजोहैसो आप
नें हृदयके अंतरधारनकीयोहैं॥ तातें कहें॥ इतरा॰

कोजमुनांउतगोपिन॥ यहसौख्यकराडहैं सोनित
वहैं॥ तातें श्री रसकोंरसव्रजवृंदावनमें उमगिकें
वहिचल्यो॥ सोश्री यमुनाजी आपनेहृदयमें धा
रनकीएहैं॥२४॥ रसगोपीपूज्यदेव्यैनमः॥२५॥ र
स मिलन अर्थ गोपीजननें कात्यायनी आदिदे
विकोंनाम लें श्री यमुनाजीकोंपूजनकीयोहै तथा
रसरूपही श्री यमुनाजीकों जांनिगोपीजनदेवी
के मिससों पूजनकीयोहै॥ अथवा रसरूप श्री य
मुनाजीहैं॥ औरगोपीरूपहूं श्री यमुनाजीहैं जुगल
सरूपजांनिदेविकों नांई पूजनकरीयें॥२५॥ रसव्र
तफलप्रदायैनमः॥२६॥ कुमारिकाकोंव्रतकोंफल र
रससोंदेतभई॥ यहकहिकें यहजताए सगरेंव्रत
कोंफलएकश्री रसहैं॥ सोश्री यमुनाजीकें आश्रयतें
प्राप्तहोतहैं॥ कुमारिकानेंकात्यायनी देवीकोंव्रतकी॰
नें॥ श्री यमुनाजीकीरेनुकीदेविकसबकें यहमांगपा॥ नं
दगोपसुतंदेवी पतिंमेंकुरुतेनमः॥ सोश्री ठाकुरजीकी

यमु स्वोरिकें मिलनमए २६ ॥ कृष्णलीलार्थमायात्ता
१७३ यैनमः ॥ २७ ॥ कोई आसंकाकरेजो ॥ तुंम श्री यमुनाजी
कौंएसोसरूपकहें ॥ परंतु इहांतो प्राकृतनदीकी नाईं
दर्सनहोतहें ॥ तहांकहतहें श्री कृष्णकी लीलाअर्थ
मायाको धारनकीयोहें ॥ कहूं थोरोजल कहूंवहुतज
लकहूं जलकेमध्यपुलिन थोरोजलहोइ ॥ तोनकु
नसहितजल विहारकरें ॥ कहूंगहिरेजलमें भक्तजाइ
परें तहांतें प्रभुकाढें ॥ हास्यादिकरस प्रगटहोइ ॥ ना
वषेलनलीलाकरें ॥ भक्तकोंगोदमेंलप्याकों चेंचव
यमध्यपुलिनमेंलेपधारें ॥ पारलेजाइ थोरे जलमें
विहारहोइ ॥ प्रभूकोमनलौकिककी नाईं विहारकोम
नभयो ॥ ताकें अर्थ यहजलरूप श्री यमुनाजी होत
भई ॥ २७ ॥ कृष्णनीरधसंगतायैनमः ॥ २८ ॥ औरनदी
समुद्रकोपतिकरिकें मिलीहैं श्री यमुनाजी श्री कृ
ष्णकों समुद्रको भेदकें पुरुषोत्तमकों मिली ॥ समुद्रकों
परसहूं नकीयो ॥ २८ ॥ कृष्णपादस्पर्शकामायैनमः ॥ २९ ॥

जवश्री वसुदेवजी श्री ठाकुरजी कोंलें श्री गोकुलच
लें ॥ तवचरणपरसवेअर्थवढी ॥ चरनपरसकरि
मारगदेतभई ॥ याप्रकारन भक्तनकों सिक्षादीनीजो
अपनें प्रभुकों चरणपरस आवस्यकहीकरनो ॥ य
हसर्वोपरकार्यहें ॥ २९ ॥ कृष्णमानससंस्थितायैन
मः ३० ॥ एकश्री कृष्णमें मनलगायकें आश्रयकीयो
हे ॥ तथा श्री कृष्ण अपनोमन श्री यमुनाजीके आ
श्रितकीयोहें ॥ श्री यमुनाजीकों आश्रयकरे ॥ ताके
ऊपर श्री कृष्णकोमनप्रसंन्नहोइ अपनो आश्रय
देहि ॥ ३० ॥ कृष्णासक्तायैनमः ३१ ॥ एकश्री कृष्णमें आ
सक्तहें ॥ तथा श्री कृष्ण श्री यमुनाजीके गुनदेखिकें
आसक्तवसहूहगएहें ॥ तथा श्री यमुनाजीमें प्रीति
करि आसक्तहोइ ताकेऊपर प्रभु आसक्तहोइ ॥ ३१ ॥ कृ
ष्णभक्तायैनमः ३२ ॥ श्री कृष्णकी भक्तिमें श्री यमुना
जी तत्परहें तातें श्री कृष्णहू भक्तिकेवसहोइ श्री यमु
नांजी कहेंतहें सोई करतहें ॥ ३२ ॥ कृष्णप्रीतिप्रसाधि

श्रीप न्यैनमः॥ हसकी श्री तिकी साधिकाहे॥ श्री यमुना॰
२०४ जीके आश्रय होइ तो श्री यमुनाजी श्री हसकी प्री॰
ति हृदयमें बढावें ३३॥ हसाधिरेणवहुलायैनमः॥
३४॥ श्री हसकें चरणकमलकी रेणु ब्रंह्मादिकनको
दुर्ल्लभहे॥ सो श्री यमुनाजी पास अपार हें श्री यमु॰
ध नाजीके आश्रय ते प्राप्त होइ॥ ३४॥ हससेवकसन्मुखा॰
यैनमः॥ ३५॥ श्री हसके जे सेवक अनन्य हें॥ तिनही
के सन्मुख श्री यमुनाजी हें तिनहीं कों अलौकिक दें
हसामर्थ्य रसदान श्री यमुनाजी करत हें॥ और कों
नांहीं॥ ३५॥ हसभावविरोधिस्वदासप्रकृतिनासि॰
न्यैनमः॥ ३६॥ हसकों भाव मुक्ति देनकों तामें विरोध॰
करिभक्ति दिवावत हे और दास जो भक्त तिनकी प्रकृ॰
ति जो लौकिकासक्ति छुडाय भगवदासक्ति कराइ प्रभुसों
संबंध करावत हें ३६॥ श्री हसतूर्यप्रियायैनमः॥ ३७॥
ऊपर यह भाव हे॥ राजलीलामें प्रथम रूक्मिणी पीछें
जांबुवती॥ पीछें सत्यभामा॥ पीछें कालिंदी चतुर्थ॰
प्रिया॥ इहां व्रजलीलामें श्री स्वामिनीजी श्रुतिरू॰
पा कुमारिका चोथी श्री यमुनाजी॥ तथा हस श्री स्वा॰
मिनीजी श्रुतिरूपा कुमारिका इतनी चारोंकी प्रिया
हें॥ श्री यमुनाजी कहे सो सगरे करे॥ ३७॥ निजाचार्य
पदांभोजे दासे भावं प्रयच्छतु॥ या प्रकार श्री हरिराय
जी अषवक करि श्री आचार्यजी महाप्रभूनके चरण
कमलको दासत्व मांगत हें॥ श्री यमुनाजी देनवारी हें
जैसें श्री गंगाजीको दांनदीए पद्मपुराणहूमें कह्यो
हें॥ श्लोकः॥ चंद्रीरसंमधुसौ रविसुत विंध्यासुधावहा॥
नारायणी श्वरी ब्राह्मी धर्ममूर्तिः कृपावती॥ १॥ पाव
नी पुण्यतोया यासप्तसागरसंगता तोयिनी यमु॰
नायांमि स्वर्गसोपानपद्धतिः॥ २॥ कालिंदी केलिसलि॰
लासर्वतीर्थमईनदी॥ नीलोत्पलदलस्यामा महापा
तकनेधजा ३॥ कुमारि विशुद्धचिता अवतारितगतिः
सरित॥ सरणागत संत्रामे निपुणा सगुणा गुणा ४॥ यए
भिर्नामभिः॥ प्रातर्यमुनां संस्मरेन्नरः दुरस्यो पिसपा॰

इत्यादिकभावतें
यमुनापेन्यो महद्भ्यो लेपंमुच्यते ॥५॥
१७५ जे षटकौदत्राहराकों उत्सव श्री यमुनाजीमें अप्तपंत
प्रीतिपूर्वक भावनाकर्त्तव्य है ॥ ॥ अप्रसांनया
त्राकोंभाव ॥ एकसमय श्रीजी श्री यमुनाजीके संग
वैठे परम रहस्यकी वार्त्ता परस्पर गलबांही दीयें
रतहुते ॥ ताहीसमय मुख्य श्री स्वामिनीजी पधारी ॥
तबदूरितें श्रीजी देखिकें महाचिंता मनमें किएजो
आजमानहोइगो ॥ इहां श्री यमुनाजी सों कछू कह्यो
नजाइगो जो तुम जावो ॥ अबै श्री स्वामिनीजी पधा
रतहें सो देखिकें कोप करेंगी ॥ इतनेमें श्री स्वामिनी
जी दूरितें दूरिक रिकें देखे तो दोउ सरूप स्याम परम
सुंदर परस्पर वार्त्ता करतहें ॥ तब मनमें कोप करिकें तु
तावलसों पग धरत पधारी इतनेंही में श्री यमुनाजी
नें दोउ स्वरूपनके मनकी जानी जो श्रीजीको चिंता
भई ॥ और मुख्य श्री स्वामिनीजीके मनमें कोप भयो
तब तत्काल जलरूप होइ नीरजलके जाय विरा

जी ॥ पाछें तहां श्री स्वामिनीजी पधारिके आंषसहित
श्रीजी सों बोली जो वह स्यामसुंदरी तुमारे पासहती
सो कहां है ॥ तब श्रीजी कहें जो इहां तो कोई नांही है ॥ में अ
केलो ही वैठ्यो हूं तुमको भयो होइ तो मेरे पास सब ठौर
देखिलेहु ॥ तब सब ठौर श्री स्वामिनीजी दूढि करि दे
षी ॥ तहां कोई देषी नांही ॥ तब अपने मनमें लाज पा
ईजो आजमें चूकी परी ॥ इतने में पास स्यामसुंदरी दे
षी हें ॥ और अब कहूं दीसत नांही ॥ इतनेमें श्री ठाकु
रजीके मनमें आनंद भयो जो में सांचो भयो ॥ तब बो
लेजो तुमको तो निश्चय हो यामों तिनम होत हें ॥ मेरे तो
एक तुमही हो और कोमें जानत हों नांही ॥ तुम मोको
झूठे ई और की और लगावत हों ॥ आजु सांचे में हूं ॥ तुं
म नित्य याई भांति जानियो ॥ या वातको आजु निर्द्धार
करो ॥ यह सुनतही श्री स्वामिनीजी चकित भईजो आ
जइनकी चोरी प्रगट न होइ तो ये याही भांति नित्यमो
कों झूठी करेंगे ॥ यह विचार करत हे इतनेमें श्री चंद्रा

सांन वलीजी पधारि कही अहो प्रान प्यारी आज कहां छिं
२० ई तामें हों ॥ हमतो तुंम्हारी हैं हमसों सगरी वार्त्ता कही
चहीये ॥ तव श्री स्वांमिनी जी कही सुंनो चंद्रावली जी
तुंम सवनमें श्रेष्ठ वडी हों ॥ परम चतुर हो भली भई जो
या समय तुम हूं आई ॥ आजु में दूरि तें एक स्यांम सुं
दरी परम मनोहर श्री जी पास वेठी परस्पर रसवार्त्ता
करत देषी हती जाकों देषिकें मेरो मन लुभ्यांनो जो
इनसों मिलिये ॥ सो अव में निकट आई तव न जां
नियें देषत देषत में कहां गई ॥ सो या तें में जो देषी
हूं नाहीं ॥ और सत्तही में रूठी परी ॥ सो आजु मोकें जो
कोई सांची करें तिनकों में जो वह मांगें सो देंहूं ॥ तव
श्री चंद्रावली जी कही जो में तुमकों वह भेद वतांऊंगी
इतनों सुंनत ही श्री स्वांमिनी जी उनकों मिली ॥ तव
श्री जी मन ही में श्री चंद्रावली जी सों कहें जो तुंम यह
कहा कियो ॥ तव श्री चंद्रावली जी हू सेंन ही में हीं कही
जो तुम कछू चिंता मति करो एक नोतन लीला प्रगट
करोंगी ॥ पाछें श्री चंद्रावली जी नें श्री स्वांमिनी जी
सों कही जो आजु मेरे घर रात्रिकों दोऊ स्वरूप विहार
कों पाउ धारिकें जल स्थल क्रीडा करो तो यह भेद में
वतांऊं ॥ तव श्री स्वांमिनी जी प्रसंन होइकें कही जो तु
म कहोगी सोई में सर्व या करोंगी ॥ इतनें में नंदगोप कु
मारिका आई और व्रजकी स्वांमिनी सुनिके सव आ
ई ॥ तव श्री स्वांमिनी जी सवनको समाधांन करिकें क
ही जो आजु परम आश्चर्यकी वार्त्ता देखि है सो तुम हूं सं
ग रहियो ॥ देषो में सांची कहत हों कै श्री जी सांची क
हत हैं ॥ तव सर्व प्रसंन भई ॥ पाछें श्री चंद्रावली जी नें
श्री स्वांमिनी जी सों कही जो ये श्री यमुनाजी हैं सो इन
कें पास चलो ॥ तव समस्त व्रज भक्त मिलिकें श्री य
मुनाजी पास आए ॥ ताही समय श्री यमुनाजी नें विचा
री जो अव तो श्री स्वांमिनी जी को सन्मान कीयो चाही
ये ॥ तव प्रथम जैसो स्यांम स्वरूप धरि बाहिर आई ॥ म
हां सुंदरता अत्यंत भई तव श्री स्वांमिनी जी ने प्रसं

सांन न्नहोइकेंकहीजोतुंमतोहमारीप्यारीहोंसुषदाताहोंज
१२२ लविहारकरिश्रमनिवारणकरतहोंसोतुमसुषेनप्रभु
पासविराजोमेंतोश्रोरव्रजसुंदरीजोंनिकोंपकियोहों॥
तासमयश्रीचंद्रावलीजीनेंकहीजोतुंमप्रभुसहितमेरे
घरपधारो॥स्वांमिनीजीपधारेंगी॥तवश्रीयमुनाजी
नेंकहींचलोमेंतोसवनकेकहेमेंहोंउत्तनोसुंनतसमस्त
स्वांमिनीनेंश्रीयमुनाजीसोंवीनतीकरीजोश्राजुश्री
चंद्रावलीजीकोपरमभाग्यहे॥जोदोउस्वरूपपधारिप
रमनीलाकरेंगे॥हमतोतुम्हारीहेंतुंमहीकोंजांनतहें
॥साएसोउपाइकरोजोहमकोंयहसुषकाहूंप्रकारप्राप्त
होइ॥जुगलस्वरूपपधारेंतुमहूपधारो॥हमारेंजुजमे
जलस्थलकीडाहेहूवोहोतदिनलेंतापहोइरह्योहे॥
वयहसवनकीविनतीसुंनिकेंश्रीमहारांनीजीकोंदया
श्राई॥सोप्रसंन्नहोइकेंसवनसोंकहीजोतुंमएकउपाय
करो॥उत्तमपात्रमेंमेरोजलपधरावोतांमेंमेंपधारोंगी
श्रोरप्रभूहूंपधारेंगे॥सगरीरात्रविहारलीलाहोइ

जीप्रातःकालजलविहारहोइगोयाप्रकारश्रीमहारांनी
जीकेंवचनसुंनतहीसमस्तस्वांमिनीश्रपनेघरश्राइ
उत्तमस्वर्णकेंपात्रलेंश्रपनेंकुंजमेंश्रीस्वामिनीजीकें
भावते॥श्रष्टकोंनकेंचोककोरीहरदीसोंकरिपाछेंसु
दरगांनभावसहितकरतश्रीयमुनाजीकोंपधरावनला
गी॥तातेंइहांहूंपुष्टिमार्गमेंव्रजभक्तनकीभावनाक
रिकोरीहरदीकोचोकपूरि॥पाछेंश्रपरसहेसोविरह
कोगोपनहेंजोश्रपरसहोइतिनकोंछुवें॥उनहूंकोंवि
रहकरितप्तहें॥तातेंउनकेसंगश्रीमहारांनीजीकोंपध
रावतहें॥पाछेंचोकपरगगराधरितुलसीकेसारचंद
नसापवेलिश्रादिकेंपुस्पधरावतहें॥पात्रकोंचंदन
लगावतहें॥पाछेंश्रधिवासनकरतहें॥भगवतःश्री
पुरुषोत्तमस्यप्रातःस्नानार्थेजलाधिवासनंकरिष्ये
॥पीछेंधूपदीपश्रारतीकीजेंकोरीहरदीकेचोकसों
श्रीचंद्रावलीजीश्रपनेंनिकुंजमेंचोकपूरें॥परमभं
गलभयोजेष्टानहेंतेंसवतेंवडे॥जेष्टाश्रीचंद्रावलीजी

स्नान हैं तिनके मनोरथतें यह लीला है॥ गागर हैं जलकी सो
१७८ श्री यमुनाजी की पुलिन हैं॥ श्रीस्वामिनीजी के हृदय
तें प्रगटी है॥ तामें केसर डारें॥ सो स्वामिनी जलनीत
रहें॥ सो महारानीजी तुलसी हैं सो अनन्य भावापनकु
मारिका हैं और श्री स्वामिनी जी के अंगको गंध है राइ
वेलि आदि फूले हैं॥ सो श्री चंद्रावली जी कों उज्जल
भाव परम फूली है॥ चंदन हैं सो समस्त भक्तन सहित
प्रभु महारानीजी के॥ तीरकुंज में विहार है॥ जलकी गा
गरि कों ऊपर सों चंदन लगावत हैं॥ सो श्री चंद्रावली
जी रूप योगमाया जो यह लीला संबंध लीला सो ही है॥
तिनकों जलकी गागरि ही दीसें अधिवासन करत हैं
सो प्रभु की ईश्वरता दूरि करनार्थ तव प्रभु वस हैं तें
ली जाकों नाम सुनत हीं॥ धूप है सो कवहूं स्वामिनी अ
पनें भाव में प्रभु कों बस करत हैं॥ दीपकुमारिका अप
नें तापनिवृत्ति करत हैं॥ भोग श्री महारानीजी अप
नें भाव सों सब करत हैं॥ आरती श्री चंद्रावली जी अप

निकुंज में पधराय दुखवारत हैं॥ इत्यादिक भाव विचार
रैं॥ या प्रकार समस्त भक्त अपने घर महारानीजी कों प
धरायें॥ समस्त रात्रि विहार लीला प्रातःकाल जल
विहार होइगो॥ या प्रकार जलरात्रि की भावना॥
अब जगत में प्रसिद्ध भाव यह है जो श्री नंदरायजी
अपने पुत्र की कुसल बरस दिन के लीये वेद मं
त्रसों जल ल्याइ अधिवासन करावत हैं॥ ब्राह्मन
सों वेद पढावत हैं॥ और वेद में कहे हैं॥ श्री भगवान
कों सीतल जलसों न्हवाइ धूप दीप नैवेद्य धरत
हैं॥ सो यहां पुष्टिमार्ग में वेदमार्ग हैं नित्य सितल
जलसों स्नान करावे सो वात्सल्यता जात रहे ता
तें नित्य उस जलसों॥ एक दिन वरस में सीतल
जलसों वेदवचन पालनार्थे॥ अथवा श्री नंद
रायजी वृद्ध भए हैं सो नव८॥ नंद सों विचार क
रि अपने आगे पुत्र कों राज्याभिषेक करावत
हैं॥ तातें विचार करि सगरे व्रज में न्योता दी

सांन्त यो॥ तब समस्त ब्रजभक्तनको परम आनंद भयो॥ हृदयमें
१०६ उछाह भयो॥ अब ताईं ब्रजराजसुत हते॥ अब ब्रजराज
भए अब डर कहा रहे॥ तातें सीतल सांमिग्री घरघरतें लैकें
चली॥ सो श्रीस्वांमिनी जी सहित नंदालयमें आई॥ इहां
श्री नंदरायजी बडे बडे रिषिमुनी गर्ग आदि बुलाए॥ पा
छें इहां परात धरत हें॥ सो श्री नंदरायजी कों चोक मनि
षाचित हे॥ तापर जडाऊ चोकी धरि कोंमल वस्त्र विछा
इ श्री यसोदाजी सों कहे जो पुत्र को जगावो॥ तब श्री य
सोदाजी कें जगाये जगत नांही॥ तब श्री स्वांमिनी जी आ
गावत हें तब राज्याभिषेक की रीत भूपें अप्रसांन किए॥ फ
रंतु इहां मात्र चरण अब ब्रजभक्त सबनसों छिपायकें
मंगलाभोग आरोगावत हें॥ जो सांन करत सिंगार होते
बहोत बार होइगी॥ रात्रके भूखे हें॥ याभांति मंगलाभोग
आरोगें पाछें श्री नंदरायजी के पास चोकमें पधारे॥ त
ब श्री नंदरायजी धोती उपरना पहरावत हें॥ सो यातें
जो अब राजा होउगे॥ बडे होइ सो धोती उपरना पहरि

वेदी तसोंसंकल्प महाप्यमें जल लें करि पाछें न्हाइ॥ या प्र
कार प्रभुकों चोकी पर पधराय॥ तब दसों दिसा ब्रजभ
क्त गांन करत हे॥ प्रभु सबनको सन्मुष करदर्शन करत हे॥
तासमय विप्र वेदमंत्र पढत सहित जल आंनें॥ आर
संष हे सो जलको आधिदैविक महाप्रतापी हे॥ तातें
सेषसंषको पूछ महादोषरूप हे॥ यातें सोनें रूपेसोंम
ढ्यो हें॥ तथा हस्तसों दाविलेइ॥ तासमय अप्रसांन करा
बन लागे॥ तब प्रभु बालभावसों हठ कियाजो व्रषभा
न जी पास बेठेंगे तो न्हांऊं॥ तब वांमभाग पधराय उत्तर
मुष बेठे॥ ताको कारण यह श्री गोकुलते उत्तर दिसा
रावल हे॥ सो श्री स्वांमिनी जी को हे॥ तातें तिनके सन्
मुष बेठत हें॥ देवता अस्तुति करत उपरतें फूल डारत
हें अनेक बंदीजन जक्ष गंधर्व झांझ मृदंग लै बाजे ब
जावत हें॥ नित्य करत हे॥ पीछें अंगवस्त्र करिकें श्रृं
गार केसरि कोरकें धोती उपरनां॥ केसरि कुलह तथा
आगरई धोती उपरना कुलह सिंगार॥ पाछें भक्तनके

न हृदयसी तलनये। तातें श्री यसोदाहू और व्रजभक्त हू सो
१८ तलनोग धरतहैं॥ यहलो प्रसिद्धिभावहै॥ और अब पु
ष्ठलीलासंबंधी व्रजभक्तनको भावकहतहैं॥ मंगला
भोगश्री चंद्रावलीजी के निकुंजमें इनके मनोर्थकोहै
॥ पीछें धोती उपरनाश्री स्वामिनीजी की साडी के भाव
सों पहिरावतहैं॥ परातहै सो श्री चंद्रावलीजी को नि
कुंजमंदिरहै॥ तापरचोकी है सो श्री चंद्रावलीजी की
गोदमें बिराजें दोउ स्वरूपको तहां तिलककरतहैं॥ सो
अपनें अपनें निकुंजको राज कियो जो हमारे राजा कि
यो जो हमारे राजा तुम अब याही प्रकार नित्य [illegible]
ता पधारी जी जाकरो॥ उत्तरतें श्री महारानीजी श्री गो
कुलमें पधारतहैं॥ तातें श्री महारानीजी द्वारा य[illegible]
लाहैं॥ यातें उत्तरमुषवेणतहैं॥ म्हाली खिरियासंघनाद
सों उच्चे स्वरसों श्री चंद्रावलीजी गावतहैं॥ झालरहै सो
श्री यमुनाजी के भावसों॥ घंटाहै सो कुमारिकामधुर
सुरसों गावतहैं॥ वेदपठतहै सो आदिदैविकमुनिरूप

भ्रमरश्रुनक गुंजगानकरतहैं॥ वीनबजावतहै सो श्री स्वा
मिनीजी के सुरके भावतें॥ मृदंग श्री यमुनाजी के भावतें
॥ झांझि श्री चंद्रावलीजी के भावतें॥ तालमंजीरासों
कुमारिकामधुरसुरसों॥ ताली चुटकी समस्त व्रजभक्त
नके संगरे सहसों जलक्रीडामें प्रभुभक्तसर्व मिलिके
कुलाहलकरतहैं॥ सो कीर्तनिहैं॥ जलमें पुष्पपरतहैं
सो वेंनी क्रीडाकरत धूवीहैं॥ उन्मत्तभए सो फूलभरत
हैं॥ जलके सरीपी तरंगभयो॥ सो श्री यमुनाजी में व्रज
भक्तनके अंगराग श्रम जलतें सुगंधसहित तथा दोउ
कराडे वृक्षकी डार लटकी रही हैं॥ तहांतें अनेक पुष्प
सुगंधसहितहैं तुलसीसहित पुष्प प्रभूके ऊपर परत
हैं॥ अस्थिर रहतहैं॥ सो कबहूं प्रभु गहरे जलमें जातहैं
॥ तव भक्त डरपिकें प्रभुको वेष्टित होतहैं॥ इत्यादिक
अनेक भावतें जलक्रीडा करतहैं॥ ताही समय मुख्य
श्री स्वामिनीजी को यह मनोर्थ भयो जो नाव खेलन
जी लाकरी थे॥ सो प्रेमामृतमें कहे हैं॥ जमुनाना विका

सांज गोपी पारावार कलोद्यम॥ ताई समय श्री यमुनाजी
१२१ परम सुंदर नवाडा (नाव) मां तिजातिकें विश्राम निस हित सिद्धि
कीए॥ तब भक्त कहें हम पथिक हैं॥ तुम खेवट होइ हमर
कौ पार उतारो तो उतराई दें॥ तब श्री ठाकुरजी सग रेभ
क्तनकों बैठारिकें मध्यधारामें नाव फिरायकें कही
जो नाव हमारे हाथ नांहीं है॥ तुम समारें रहो या पहसुंन
तहीं डर पायकें कोई॥ पटपीत पकरें कोउ हस्त पकरें॥ कौ
उ चरणारबिंद पकरें॥ सब अपनें अपनें मनोरथ डार
कें सिसतें किए॥ पाछें कहें अब हम तुमारे हें॥ पार उता
रो॥ तब श्री ठाकुरजी कहें हमसों मान न करो तो पार उ
तारें॥ तब कहें अब हम मान न करेंगे पाछें सबनसों उ
तराई लिए॥ काहूंकी ढेढी, काहूंकी नकबेसरि, पहुंची,
नूपुर, चोली, साडी, सीसफूल, बाजूबंद, हार, चोकी, दू
स्यादिक॥ तब श्री स्वामिनीजीनें कहीजो॥ इतनें आर
भूषन वस्त्र लेकें तुम धरि मति राखो॥ तुम्हारो श्रृंगार
करें॥ तब प्रभु प्रसन्न भए॥ सो श्रृंगार में सखी जे पकी

एपीछें पार उतरें॥ तहां अनेक क्रीडा किए॥ पाछें एकांत
भक्तनकों नाव परबैठारि मध्यधारामें विहार करि
पार उतरे॥ या नाव लि अनेक क्रीडा हें नाव बंतजोनें महा
प्रभूकी कृपासों मार्ग भावात्मक हें॥ पीछें सुंदर वस्त्रतें
अंगवस्त्र करि पुलिनमें बिराजे हें श्रृंगार धरावन
लागी जो उतराई में लिए हे सो॥ और प्रभु नित्यप
हरे हें सोउ कहूं कुलह केसरी तहां श्री स्वामिनीजी
के भावतें॥ कहूं कुलह स्वेत तोरा केसरी तहां स्वेत श्री चं
द्रावलीजी केसरी श्री स्वामिनीजी तें सब केसरी कोर
की साडी॥ ठाढे वस्त्र स्वेत कहूं केसरी लहंगा लाल अ
तलस छापादार॥ स्वेत पर केसरी छापा॥ एपिछोडा के
सरी कोर॥ तथा अगरजाई॥ ऊपर कुलह वत भावसों॥
॥ गोपीवल्लभ में नित्यको नेग॥ और उत्सव में अधिक
में पना मिश्री कों बांम और धरि श्री स्वामिनीजी को
अधरामृत॥ तामें गुलाब जलकों मल कुमारिका के
भावतें॥ मिरच श्रिलि रूपा॥ सीतकालों रस॥ उद्वाधक

स्वान कपूर श्री स्वामिनीजी के अंग को गंध इलाची श्री यमु
१८२ नाजी ॥ षांडको पनाद घिननागसो अलिरूपाको अ
धरामृत ॥ तामें गुलाबजल मुख्य श्री स्वामिनीजी ॥
मरचतामसीनच ॥ कपूर श्री यमुनाजी ॥ इलाची छो
टी कुमारिका ॥ बीजके लडुवासों श्री चंद्रावलीजी के
कुचरूप चासनी श्री स्वामिनीजी के रससों बधे खिरो
जीके लडुवासों श्री यमुनाजी लाल आसक्त अनुरा
गसहित स्वामिनी के भावरूप रससों बांधे छोटे सो
बिना अक्रमली लाकोई गुरजन को निकुंज में नयनांही
है ॥ अंकुरी मूंग की सो कुमारिका बालक हती ॥ यातें
लामें भाव कौ अंग उज्वल प्रगट भयो ॥ सत्तुवासो कुमा
रिका को कुच भाव दही भात महारानीजी को अधरामृ
त ॥ सिषिरिनभात श्री चंद्रावलीजी को अधरामृत
॥ घिरिसों श्री स्वामिनीजी को अधरामृत संयोगसमय
अमर समान समय को अधरामृत ॥ बूरा परे ॥ सो प्रेम म
धुर वचन सों मनावत है ॥ मीतर घी परे सो ॥ मीतर स्वा

मीनीजी को सनेह है ॥ कोन्हा के वीज श्री चंद्रावलीजी
के दंतावलत है दाडिमसो श्री स्वामिनीजी के दंतावलत
॥ फालसासो कुमारिका के दंतावल ॥ छोटे लाल पीरे
आवसो श्री स्वामिनीजी के कुच ॥ बडे श्री चंद्रावली
जीके कुच ॥ हरसो कुमारिका के कुच नरम आंवसो श्री
यमुनाजी आदि या प्रकार समस्त भक्त ॥ जांबूसों श्री
यमुनाजी को भाव तथा श्री ठाकुरजी को भाव भक्त अनु
भव करत हैं ॥ और मेवा आदि जो समस्त स्वामिनी मूंग में षो
परा आदि जो मिलावत है सो श्री यमुनाजी के संग ते भाव
ते अंकुर भयो ॥ सगरे उत्सव में चारि वस्तु मुख्य ॥ सेव श्री
स्वामिनीजी ॥ घाघिके वडा श्री यमुनाजी ॥ मीठा साक
कुमारिका ॥ सीनकुंडा श्री चंद्रावलीजी सी तकार ॥ राज
भोग में प्यारी प्यारी उत्सव के सिज्या पास हूं दुः पहर की आ
रती ॥ पाछें न्योछावर श्री चंद्रावलीजी करें सेन में भू
जी तरी अंकुरी जो फेरि अंकुर आर ठोर न होइ ॥ तैसे हूं
वै सब भूंजे अन्नवत होइ हैं ॥ यह लीला के अनुभवयो

सांन
१२३

झहे॥ इतिश्रीहरिरायजीकृतसांनयात्राकीभा
वना॥ अथआगेंदिन १५ सारोमुरलीकेभावसोंगा
वे॥ अबजादिनतेंराजबेठेतादिनतेंभक्तनकेम
नमेंयहनिश्चयभयोजोअबनिर्भयतासोंपधारेंगें
॥सोइहांतोमुख्यस्वामिनीचारहें॥सोपरस्परअपनें
कुंजमेंनित्यपधरावनीकरें॥तबऔरस्वामिनीव्रज
कीनकोंमहाविरहभयोजोअबहमारोमनोर्थकेसें
होइ॥तबसोरठरागमहाविरहकोहे॥ताकोंगाइकेंसों
रहदिनविताए॥पाछेंएकदिनपुष्यनक्षत्रलक्ष्मीम
मुख्यश्रीस्वामिनीजीहें॥सोमहाप्रभुजीकरेहेंसोमा
ग्निहृदयेतेचेलीजातीराधिसायनं॥लक्ष्मीसहस्रला
जाग्नि:सव्यमांनंकलानिधिं॥१॥एसीश्रीस्वामिनीजी
कीप्रार्थनाकीएजोकवहूंहमारेंऊपरकृपाकरिकें
दोउस्वरूपपधारो॥तबश्रीस्वामिनीजीकहेंहमतो
अपनीकुंजमेंपधारेंगें॥तबसगरीप्रसंन्नहोइकेंअ
पनीकुंजमेंसामिग्रीआदिसिद्धिकरनलागी॥तातेंपु



ष्यनक्षत्रकोयहउत्सवमांनतहें॥कवहूंदूजकेदिनरथ
यात्रापुष्यनक्षत्रहोइ॥कवहूंपरिवाकोहोइ॥कवहूंती
जकोहोइऔरआगेपीछेंनक्षत्रनजाइ॥काहेतेंपहि
लाप्रथमदिनश्रीयमुनाजीकोहें॥औरतीजहेसोश्री
स्वामिनीजीकेपाछेंश्रीचंद्रावलीजीइनतेंप्रगटी॥
हें॥तातेंपुष्यइनकेमनोर्थतेंघटेबढेआगेंनजा
इ॥औरजन्माष्टमिकोरोहिनीनक्षत्रचाहेंतितनोंघ
टेबढे॥काहेतेंभगवांननक्षत्रकेवसहें॥भक्तभगवान
केवसनांहींहें॥मंगलाभोगनित्यकरोनांहीं॥मंगलाआ
रतीअभ्यंगश्रीस्वामिनीजीकेभावतेंहें॥पाछेंशृंगार
में[illegible]वागास्वेतसोश्रीचंद्रावलीजीकेभावतेंहें॥किना
रीलालसोश्रीयमुनाजीकेभावफलफूलातहें॥एसेंहीं
कुल्हेकहूंस्वेतवस्त्रपरबूंटीकस्तूरीकी॥कहूंस्वेत
जालीदारवागाकिनारीलहरीयादोउभावभक्तनके
॥कहूंमुख्यस्वामिनीकहूंश्रीचंद्रावलीजीकहूंश्री
यमुनाजी॥कहूंकुमारिका॥याप्रकारभावफिरतहें॥ता

रथ सोमंदिर मंदिरकी रीत है ॥ तनीयां सूथन जाल ॥ तनियां
१८४ मुख्यस्वामिनीकों निजभावहे ॥ सूथन कुमारिकाको चो
जीकीबांहहे ॥ पटुका समस्त भक्तनके अनुरागसों बां
धेंकटि ॥ तातें सबनके घर पधारत हें ॥ चंद्रकाकहूं पां
च ॥ ५ ॥ चारोभक्त ॥ एकसमस्त व्रजभक्त ॥ कहूं चंद्रकातीं
न ३ ॥ सामुखिया १ श्रुतिरूपा २ ॥ कुमारिका ३ ॥ कहूं चं
द्रका १ ॥ कतरी २ ॥ मुख्यके भाव चंद्रका ॥ कतरी दोय हि
सकुमारिका श्रुतिरूपा कुमारिकाबांमदिस बेठें ॥ श्री
स्वामिनीजी भीतर होइ तब पंचाध्याई के भावसों एक स
षी कां भीतर राखि के लेगए ॥ स्वामिनीजी साडी स्वेतकी
नारी जाल ॥ चोली पीत लहंगा अतलसको [illegible] ॥ आ
भर्ण लाल अनुरागसूचक बडे हार जडाऊ हू पहरे भारी
श्रृंगार ॥ गोपीवल्लभमें सेवक राखे ॥ राजभोगमें सेव
तिनकुंडा छाछिके बडा ॥ मीठा साक ॥ पीछे रथको प्रका
र ॥ कहूं गोपीवल्लभ पीछे रथ बेठें ॥ तहां यह भाव ॥ स
ब भक्तनके घर होइ आइ पाछें राजभोग आरोगिकें

श्रीस्वामिनीजीके कुंजमें नित्यकी नांही पोढें ॥ कहूं राज
भोग [illegible] पीछे भक्तनके घर श्रीस्वामिनीजी स
हित तहां पोढें ॥ पाछें भोगसमय तहां पधारें ॥ तबसंध्या
आरतीसमयहूं घर आवे ॥ तातें भोगके समयहू रथ
पर परमनोर्थ होइ तो अथवा रथको मनोर्थ आगे पी
छेंहूं होइ ॥ असाढमहीनो चाहीयें ॥ जैसें डोल रामनो
मीकें भीतर ताई होइ ॥ अं[illegible]नकुटका तिकसुदी पू
न्यो ३ ॥ ताई होइ ॥ हिंडोरा श्रांबनतें भादोवदिसप्तमी
॥ तांई होइ ॥ असाढसुदीमें होइ सो यातें जो श्रीस्वा
मिनीजी प्रगटी श्रुतिमें सो तो भारी मंडानसों कस्यो चा
हियें ॥ बदि लस पक्ष प्रभुको है तिनके भावसों रथ बन
वनो अधिकमें अंकुरी पनाइ तनोइ राजभोगमें सिके
बडा अवकहूं रथमें घोडा नांही ॥ कहूं दोय घोडा हें ॥ ता
को अभिप्राय यह है ॥ प्रभुवाल भावसों मात्र चरणसों
बहत है भोमें यामें रथ चढिकें व्रजमें डोलेंगो ॥ यह भा
वसों सगरो साज श्री यसोदाजी गाडीको सिद्धि करि

रथ पकरीआनलषेंचें॥ याभावव्रजमेंपधारे॥ तातेंघो
१५५ डानांहींरहतहें॥ औरसोरहहजारकुंमारिकावारी तथा
श्रुतिरूपास्वांमिनीजीप्रभुविराजेहें॥ तहांदोयघो
डासर्वपदार्थकेंनीतरहें॥ ऊपरघोडाहें॥ नीतरभ
क प्रथमरथकों अधिवासनांकरतहें॥ सोअक्र
तिरूपाकेंभाव॥ रथकोंचंदनलगावतहें॥ सोप्रभु
की अनेकसक्ति जोगमायारूप अछतडारतहें॥
जोदेषेसोघोडारूपदेषे भक्तरूपनांहींदेषे॥ धू
पदीपनैवेद्य आरतीकरी रथकीजात्राकेंभावसों
बहूवेठीगहनाअस्तव्यस्तपहरावतहें॥ सोभक्तरसप्र
वसहोइश्रृंगारकीएहें॥ रथरूपभावकें आंनंदमेंमगनहें॥
प्रथमरथपरविराजें॥ तवझालरीघंटासंषनादवृदंगादि
ऊवाजें॥ स्नानयात्राकेंभावसों॥ तहांप्रथमभोगश्रीस्वा
मिनीजीकेमनोरथकोडालतिवारीमेंकोरीहरदीकोचोक
सगरेंपूरे॥ तहांप्रथमदक्षिनमुष॥ तातेंडोलहिंडोरेंरथ
कुंजसंबंधीभावहें॥ तातेंपालनामहिरकीतिबारीमें॥ सो

नंदालयकोंभावहें॥ तहांमालापहरायरथमें॥ मेवाअ
रगजाधरिस्वांमिनीकेभावहें अंकुरितहोइफलितभ
ये॥ तातेंअंकुरीऊपरआंबधरनें॥ पनासोंश्रमनिवारक
हें॥ बीजस्विरोजीकेलडूआधेरे अंगानुभवहें याप्रकार
प्रथमभोगमेंइतनो॥ पीछेंबीडाअरोगावतदर्शनहोइ॥
रथकेश्रृंगारकोभावरथमेंचार्यौवामडांडीदक्षिनसोंचा
रोभक्तनकेंअग्रहस्तकोंभावहें॥ सोपरस्परबांहजोरि
कैप्रभुकोपकरेंहें घोडाचंचलहें॥ तातेंछतरीहेसोव्र
जभक्तनकोंमस्तकहें॥ तापरकलावतूकोकांमहें॥ सो
मासिनसोंमांगगूंथीहे तापरकलसाहें॥ सोसीसफूल
मोरचंदाहें॥ डांडीनकेघोलीहेसोचोलीकोवांहहें॥ रथ
केपीछेंसुनहरीकांमकोरंगीनपरदाहें॥ सोसाडीपहि
रेहें॥ रथकीगादिझारिरंगकीहें॥ तथाचतुर्थजूथके
लहंगापीतस्यांमलालहरोपीतश्रीस्वांमिनीजीस्यांम
श्रीमहारांणीजी॥ लालकुंमारिकाहरमेंपीतस्यांममि
लेंभावमेंश्रुतिरूपा॥ कहूंलीनरंगकीझालर॥ पीतस्यां

रथ मल्हार ॥ तहां पीतमें स्वामिनी कुंमारिका ॥ एकस्यामर
२८६ श्रीयमुनाजी लालचंद्रावलीजी रथके नीचें घात भ
लनकी गोद है ॥ तहां वे रहे है ॥ धुजाऊपर है सो श्री चंद्रा
वलीजीको बडो अंचल फरकत है ॥ और पताका है सो
कुंमारिकाको छोटो अंचल है ॥ या प्रकार रसरूप रथ
को विचार भावसो करें ॥ पीछें रथ चल्यो सो निकुंजमं
दिरकी तिवारीमें पूर्वमुष आयो ॥ तहां श्री चंद्रावली
जीको भाव ॥ सो प्रथमकी नांहीं भोगकी विधि ॥ तहांवी
रा अरोगाव तद दर्सन होइ ॥ पीछें रथ चल्यो सो चोकमें
ठाढो होइ सो चोक श्री यमुनाजीको पुलिनको भाव है
॥ तातें रथको मुष उत्तर दिसा रहे ॥ काहेतें रथ श्री
यमुनाजी श्रीगोकुलतें उत्तर दिस है ॥ तहां श्री महारानी
जीके मनोरथकी तथा श्री महारानीजीसों मिली कुंमार
रिकाके भावकीसों सिंग्री अंगीकार कराए ॥ तहां रथ पर
दर्सन होत है तातें चारो वेरचमर मूठा पंषा होइ ॥ चवर
श्री चंद्रावलीजीको भाव पंषा श्रम निवारक श्री यमुना

मोरछल
जीको भाव ॥ मूठा कुंमारिका मुख्य तथा ललिताजीको
भाव बीडा मुख्य श्री स्वामिनीजीकी क्रिया है ॥ बूंदीके
लडुवा श्री स्वामिनीजीको हृदय ॥ सेवके लडुवा श्री चं
द्रावलीजीको हृदय ॥ मठरी पगा सो श्री स्वामिनीजीके
कपोल ॥ बीजके लडुवा कुंमारिकाके चिरोंजीके लडुवा
सो श्री यमुनाजी पनादोऊ मिश्र वसी तकार ॥ सुगंध श्री
अंगगंध ॥ मेवा आलो चारो भक्त रसरूप भए ॥ सूषो मे
वा प्रथम विरहको अरपन किए नवरस पाए ॥ गूंझाकू
लको भाव गूंझा भरल है कूषमें भावना रिराषे है ॥ अंकुरी
आंब मेवा फलको भाव सो नयात्रामें कहे है ॥ या प्रकार
भोग धरि समय पन्नये भोग सराय वा रा अरोगाव तद
र्सन भए ॥ पीछें रथ चल्यो सो डोलतिवारीमें आयो ॥ त
हां समस्त भक्त चारो जूथपतिके मनोरथसो ॥ बडो भोग
सबके लडुवा मठरी गूंझा पनादोऊ सिखरन वडी मीठ
षढो सर्वके मनोरथसों ॥ बीज चिरोंजीके लडु मेवा आ
लो ॥ अंकुरी आंब फला दि सबसो चोथे भोगमें धूप र

रथ दीपसंयोदिकहोइ॥ पकवांनसबधरे॥ पीछेभोगधरा
१८७ दोयरहे॥ तामेंकाहूंकोधुधाहोइतोअनसषडीलेइ॥
पाछेभोगसरायबीडाआरोगाइदर्सनहोइ॥ चारोंजू
थपतिकोचर्वितबीडा॥२॥ होइआगंच॥ भई॥ दोईदोई
भावकीपीछेआरती एकश्रीचंद्रावलीजीकीइनको
तापश्रमदूरिभयो राईलोंनवारेप्रतिबंबटेरसबको
हजो॥ अबनित्यपधरावेंगे॥ परिक्रमांसोंयातेंजो
हमारे॥ मंडलकेबिचमेंतुमसदारहो॥ ज्योंआवरिअप
पनपोकरतहेंलोकमेंप्रसिद्धियहहेजोश्रीजगंन्नाथ
जीसासुरेरथपरजातहें॥ तातेंइहांसोंऊपरदिषावे
कोंरथलेंउलरतहें॥ तबपनोमिरचबूलाचीसुगंधको
सोश्रमनिबारणार्थश्रीस्वांमिनीजीपधारतहें॥ [illegible]
सोनेकीकटोरासिंगासनमेंबिराजीकेंआरोगे॥ बागाब
डोकरिस्वेतपिछोडासुनहरीकिनारीपहधराबे॥ कुल
हरहेबडेआभूषनबडेहोइ॥ एकभावयहहे॥ भक्तसुंदर
रथसिद्धकरिकें॥ षिलोनोबनायश्रीयसोदाजीके॥ पा


सआइकेंकहेजोतुम्हारेपुत्रकेलियें षिलोंनोलाईहें
॥ तबश्रीठाकुरजीभक्तनकोभावजांनिहठकरिकेषिरा
ने॥ तबबहुतसोआनंदषिककरिरानीजीप्रसन्नहोइकें
आज्ञादईजोअपनेंषडिकेंतांईहोइआवो॥ पाछें
सबस्वांमिनीसषासोंकहेजोमैंतुम्हारेभरोसेंपठवत
हों॥ तुम्हारोभावसनेहहेंतातें॥ तबव्रजमेंल्याइपध
राइअपनेंअपनेंघरपधरायमनोर्थसिद्धकीए॥ ता
दिनतेंमल्हारगावेजोहमारेऊपररसकीवरषाघरप
धारिकेंकरी॥ जेसेंबादरकहांतेंजललायबरसतहें
तेसेंहीबरसेंअबनित्ययातोंलिवरसोरथकोदिन
एकमंदिरकीतिवारीमेंउत्सवकेदूसरेदिनरहे॥ गो
प्परीलसोंफरिपधारतहें॥ पाछेंदूसरेदिनरथबडो
करिकेठिकानेंधरिये॥ संकल्पभगवत्श्रीपुरुषोत्तम
स्वरूपरथाधिरोहनार्थंरथाधिवासनंकरिष्ये॥ अधर
तेंउरनाकरतहें आचमनसमयसोलिनकीधारनरू
पश्रीचंद्रावलीजीहेंतृषीरूप अंचलसोंमुषवस्त्र

रष्य पोढतहें ॥ यहभाव जाननो ॥ मालाऽसाढसुदी ॥ ६ ॥ षू
१२८ टी पिडुरा जसी भक्तनके मनोरथतें अत्यंग शृंगारवा
गाओ पागसाडि आदि लाल ॥ कहूं पिछोडा पाग आजु
तें वर्षा रितुको आगम है भक्तनके घरर थजात्रातें ब
रषा रितुको आगम श्रीनंदरायजी प्रति व्रजमें षषिर
पेंडतें वर्षा रितुको आगम तातें आजतें प्रसिद्धिरं
गीन वस्त्र धरें ॥ गोपी व ज्वजनमें सब व्याधिकें वडा
रू धूसा मिश्री करें इहां श्री वृषभानजी श्री स्वामिनी
जीकें रंगीन वस्त्र दिए ॥ तादिन अपनी अपनी नि
कुंजमें समस्त स्वामिनी नेरात्रको प्रभुके लीयें गी
न सगरो साज सिद्धकीयो ॥ लालरंग अनुरागरूप
कहें सो आगे वरनेंगे अनुरागकोकरेंगो ॥ वीरवधू भूमि
पर प्रगट भई ॥ घनमें विद्युत वगपांतिन वपल्लव प्र
नक भए ॥ घनरूप प्रभू ॥ विद्युतरूप श्रीस्वामिनीजी
वगपंक्ति उज्वल सो श्रीचंद्रावलीजी ॥ वीरवधु ल
लितादिक नवपल्लव लतारूप सवनको भावको विस्ता

रव ज्या ॥ सो आगें वर्णनकरतहें ॥ पीछे भ्रमरयको निकु
जको सिरिसाजको वरननहे ॥ अवसें न जागि आरोगतें
समयदसो दिसातें वादर स्याम महागंभीर उमडे ॥ सो अ
त्यंत गरजनो वारवार होन लागे ॥ विद्युत वारंवार चम
चमातहें ॥ महातीव्र सद्दकरतहें ॥ वडी वडी बूंदवरस
नलागे ॥ सो धरतीमें ऐसे कालकी तपहुती सो वाहर प्र
गटी ॥ सो तापनांहीं हें ॥ व्रजमें स्वामिनी हें ॥ तिनके मन
में महा चिंता भई जो ऐसे मेघमें प्रभु कोन प्रकार पधारें
गे ॥ यह महाताप हृदयमें भयो सो विरहको उसासल्ली
यो ॥ सो दसो दिसा महातापरूप दावानल प्रगट होवभ
यो ॥ सो प्रभूननें यह दुःष स्वामिनीनको जो तिनासमय
श्री यसोदाजी सों कह्यो जो मैं अबमें आरोगिनुकपो
मोको निद्रा आवतहें ॥ तव श्री यसोदाजी आचवनक
रायमुषवस्त्र वीडी चर्वितकरि आरोगाइ कुंचवे चोवा
रे परपधराय अपनी सषासों कही जो आजु वरषा
आई ॥ काहेतें घर छिहें ॥ तातें घरहो धर्मराज रितु आई

रप प्रभुकी नांई दसो दिसा बादर छाए ॥ यह ईश्वर्य, जलकी
१८८ वृष्टि सो वीर्य, यश, दसो दिसा ॥ पंछी झींगुर दादुर स
ब्द करत हैं ॥ तहां श्री, सों नव पल्लव वनकी सोभा सरोव
र जरत हैं ॥ ज्ञान, जो सगरो जल नदी सब अपनो प्र तिसमु
द्र कों उमडि कें चली जाइ मिली ॥ नतो ब्रह्मरूप पति
कों सर्वांग वे मिलक्यो ॥ ५ ॥ वैराग्य, परबत हैं ॥ सो
जलकों अंगीकार नांही करत हैं ॥ तातें थिर हैं ॥ मूसला
धा वहाइके वहन लागी पर्वत बूंदके दुःख सहत हैं सा
धु की नांहीं ॥ परंतु जलकों संग्रह नांही करत हैं ॥ यह
छह धर्मराज रूप आई सोदामिनी कों कछिनकहु
सुनिकें मेरा पुत्र परम कोमल बालक डरपे कहीं ऐसें
रात्रि कों राखियो ॥ यह महा कठिन रूप है ॥ तब सखीन
कही तुम चिंता जिनि राखो हमारे प्रान धन ये हैं ॥ हम
पास बैठा रि प्रहर रात्रि पंषा करेंगी अपने निकट ही पो
ढाय राखेंगी ॥ तब श्री यसोदा जी नें श्री ठाकुर जी कूं
पर सुंदर चित्रसारी में पोढाए आप नंदालय में पधा

रे तहां आपने चोबारे में पोढी ॥ इहां श्री व्रषभानजी
के घर श्री कीरती जी ने श्री स्वामिनी जी कों सेन भो
ग सखिन सहित आरोगायो ॥ ताही समय महावरषा
होन लागी ॥ अंधियारी अतिगंभीर भई पवन अ
त्यंत ही बहन लाग्यो तब अत्यंत चिंता करिके
श्री स्वामिनी जी अपनी सखिन कों सेन ही में कही
जो मैं आजु कुंज में कोंन भांति चलोंगी ॥ तुम प्रभु कों
वृंदावन कोंन भांति जो जुगी ॥ प्रभु कोंन भांति पधारें
गें ॥ यह बरसा याही समय आई अब में कैसी करोंगी ॥
इतनों विचारत ही महा विरहरूप चिंता होत नई ॥ त
ब कीरती जी सों कही मैं या भूष नांही है ॥ निद्रा आवत है
॥ तब कीरती जी आचमन कराय मुष वस्त्र करि बीडी
आरोगाय कें ललितादिक सों कही जो आजु बरसाव
हुत है ॥ अंधियारी घुमडि रही है तातें आजु लालीके पा
स पोढि रहो ॥ आप छें कीरती जी सखिन सहित श्री स्वा
मिनी जी कों चित्रसारी में पोढाइ बहुत भांति सखीन कों

वर्षा सांपी जो मेरी बेटी अत्यंत भोरी है सो घनकी गरजते
१८ डरपेगी ॥ तातें तुम अपने पास ही राषियो बहुतही
डरपे तो मोकों बुलाय लीजो ॥ या प्रकार सब सखीनकों
समुझाइ के अपने भवनमें जात भई ॥ तब श्री स्वामि-
नीजी अपनी खिरकी की किंवार षोलिके देषे तो ब
डी बडी बूंदनतें बरसत हे ॥ पवनको संनाहट तो महा स-
ब्द होत हे ॥ मेघ महा तीव्र गरजन होत हे ॥ मारगमें घो
टुलो जल बह्यो जात हे ॥ तब श्री स्वामिनीजीने कही
जो में अब केसी करोंगी ॥ कौन प्रकार सों यह महाक
ठिन रात्रि बिहायगी ॥ एक एक पल छिन कोटिक
जुग समान बीतत हे ॥ तातें अब कछू उपाय नांही हे
में तो ऊपरतें गिरोंगी ॥ तब ललितादिक अलि आतु
र सों उठि जाइ पकरिके बहुत भांति समुझाइके कही
जो ॥ हे प्यान प्यारी तु[illegible] म्हारे षिचें हम सबनकों
सुख मिलत हे ॥ तातें एसी कबहूं न कीजें अब कोई
घरीमें मेघ तो रह्यो जात हे ॥ में प्रभुको लिवाई ला

उंगी तुम धीरज राषो ॥ तब श्री स्वामिनीजीने कही जो
मेरो धीरज कोन प्रकार सों रहे ॥ मेंह संझासों लाग्यो प्रहर
एक रात्रि गई है ॥ सो यह संझाको लाग्यो मेंह आज रात्रि
में उघरेगो नांही ॥ और दादुर झीगुर मोर कोन फोरत हे
बारंबार मोर कुहुकिके मेरे हृदयको विदारन करत हें
में कहा करों दामिनी दमकत हे मेरो सर्वांग कांपत हें
और बारंबार घनकी गरजतें मेरे हृदयमें महाक
ठिन बान लागत हे ॥ यह सर्व प्रभुके मिलतें सुखरूप
होत हे ॥ अब तो मोकों महा दुखदाई हे ॥ मेरो हृदो बि
दारन होत हे ॥ तातें आजुकी रात्रि तो कोटि उपाइ सों
समुझावें ॥ परंतु मोकों बीतें सो उपाय कछू नांही हे
प्रभु बिना सर्व दुख होइ सो उचित ही हे या में मेरो दो
ष हे ॥ अब मोकों उचित नांही हें जो प्रभुने संबंध सेवा
पाहैर
बिना राषो ॥ इतनो कहत कहत विरह दुख सर्वांगमें
फैलिनी तरतें विकलता होइ सर्वांग सिथल होइ प्र
स्वेद अंगमें होइ बारंबार कंपायमान होत भई हे स्व-

चरणके आभूषन चूरी गजरा ढीले होइ गए ॥ अधरविरह
के स्वासतें सूषन लागे ॥ लालतें स्यांम होत नए ॥ मोतिनके हा
र सो आकार परि गए ॥ ता समय सर्व सुधि भूलि गई हो नाथ या
समय तुम कहां रहे ॥ हो ब्रजनाथ अब तुम ब्रजके राजा कहा
इके ऐसी करत हो ॥ हो दीनानाथ अब तब अब या समय पर
तो रक्षक तुम ही हो ॥ हो कृपासहम तुम्हारी हें अपनी नारनिकों
ओर देषो ॥ या प्रकार अनेक वचन बोलत हें ॥ दीनानाथ कृपा
नाथ ब्रजनाथ ॥ ऐसें कहिके भूमिमें वारंवार परत हें ॥ पाछें
तनेहीं में तबके वल पंचाक्षर हृदयतें जपति हें ॥ सो यह दिसा
देख ललिता चकित होइ कही जो ऐसो परम दुसह इनने सहे
हें ॥ प्रभु वेगि क्यों नाहीं पधारत हें ॥ महां कठोर दिसत हें इनकी
प्रीत समान काहूकी नाहीं हें ॥ पाछें ललिता ढिंग देखिके बोलि
हे मेरी स्वामिनी तुम ऐसें क्यों भई ॥ हम कोंतो तुम्हारे सुषतें
सुष हें ॥ तुम्हारे दुःषसों दुष हें ॥ परंतु एक मेरी विनती तुम सु
नो अब तुम दोइ घरीको धीरज धरो तो प्रभु पधारेंगे काहे
तें उनकी तुम प्रानप्रिया हो आजु उनकी प्रीति प्रगट होइगी

अपनेतो परवस परी हें अब अपनो तो कछू उपाय च
लत नाहीं हे ॥ तातें निसाधन हें ॥ तातें तुम यह वारीके इ
सनमुख नंदालयके मारगकी ओर मन लगायके देषो
॥ विद्युतकी उज्यारीमें अब कोई छिनमें कारी कामर
रिको धाई दिये हस्तमें लकुट लिये दर्सन होइगो तातें
तुमकों ऐसो धीरज छोडनो उचित नाहीं हे ॥ समस्त स्वा
मिनीनकी सिरोमनि हो ॥ तातें दुषकों सहन करिकें
अब कोई छिनमें प्रभुकों दर्सन करो ॥ इतनी सुनतहीं
श्रीस्वामिनीजी उजियारीमें बैठिकें नंदालयके मारग
सन्मुख देषन लागीं ॥ इहां श्रीठाकुरजीनें श्रीयसोदाजी
आदि सर्व पोढनी दई ॥ सब कुमारिकाके भावरूप
सरूप तहां राखि आप कांमरि कारी ओढि नूपुर जेहरि
आदि किंकिनी सब उपर चढाय सूधेकरि श्रीहस्तमें
सुंदर लकुट लें कुंजन लगाय नंदालयकी षिरकी द्वा
रा उतरिकें बरसानेकों पधारे ॥ सो मारगमें घोंटूनलों
कीच षूंदत जात हें ॥ मारगमें पातको सब्द सुनि चकु

बर्षा तहोत चहूं दिसदेषत चले जात हैं जो मतिकहूं कोई
१८२ नंदालयको तथा व्रषभान पुराको गाप मिलेगो तो उन
सो अब यासमय कोन उत्तर करेगो ॥ याप्रकार विचार
करत दिसाको भ्रम अंध्यारे में होत भयो जो व्रषभान
पुराको मारग कोन है ॥ अबमें कोनसो मारग जाउं ॥ ता
समय श्री स्वामिनी जी के विरह करिके राधे राधे हो
श्री राधे ॥ याप्रकार जप करत कहन लागे जो या समय
मारग के दुषते तुम ही मोको छुटावोगी ॥ तुम बिना यह
दुःष नांही जाइगो ॥ ऐसो विचार करत नेत्रन ते जलकी
धारा वही सो कुंजन हूं वहि गयो ॥ कबहूं ऊंचे देषत हैं
॥ कबहूं नीचे देषत हैं ॥ जैसें कोई मदपी वे देहानुसंधा
न भूले ॥ तैसें ई मारग भूलें अपनपो ऐश्वर्य आदि दे
धर्म सर्व भूलि गए ॥ ताही समय तडित को अत्यंत उजा
रो भयो ॥ सो प्यारी को महल रतनष चित तामें विद्युत
रूप श्री अंग चंद्र परम सोभायमान प्यारी को देषत भए
ताही समय छिनमें सकल दुःष दूरि होइ मनमें परम

आनंद भयो ॥ जैसें चात्रक को स्वाति जल मिलें ॥ कम
ल को सूर्य की किरन मिलें ॥ यातें कोटि गुनो आनंद पा
यो ॥ तासमय अत्यंत उतावल सों पग धरत पधारे ॥
तासमय की सोभा सुष की कही न जात है ॥ मन में यह जा
नें जो कब वरसाने में जाउं प्यारी को मिलेंगो ॥ तासमय
को पद ॥ राग मल्हार ॥ लाल माई सो मिलत हैं रंग भीने ॥
सीस सोहै कोमरा की पाई लाल लकुट कर लीने ॥ १ ॥ धू
रन की बघोटू नलो मोहन चकृत चहूं दिस हेरें ॥ कब
हूं दिसा भ्रम होत बिकल मन राधे राधे श्री मुष टेरें ॥ २ ॥
तिहिं छिन तडित उज्यारो देख्यो प्यारी महल गरोरवे
॥ रसिक प्रितम पग धरत उतावल प्रान प्रिया रस पे
षें ॥ ३ ॥ याभांति पधारत ग्हाल लसितानें देषे ॥ तब श्री
स्वामिनी जी को अपनी अगुरी की अग्र तें दिषाये जो
वेलकुट जी यें कामरि ओढे आवत हैं ॥ तब श्री स्वामि
नी जी देखिके बहुत प्रसन्न होइके कही जो हे ललिता
प्रभु की प्री लिता महा उत्कृष्ट है ॥ देषो इतनो दुःष सहन

बर्षा करिकें आवत हें ॥ तिनसों में कवहूं मान करत हों वहुत
१८३ वहुत दुःष देत हों ॥ या भांति अनेक तरह के वचन कहि
वहुत सनेह करि वारीमतें रूदन लागी जो अवहीं जा
इकें प्रभून कों मिलो ॥ तव ललिता पकरिकें कही जो तुम
अवधी रज धरिकें कछू उपाइ करो जा प्रकार मिलाप
होइ ॥ इहां सब नेर द्वार लगे हें ॥ तातें उपाइ बिचारो ॥ ता
ब सषी ननें तो तिवारी में षडिक में वारी हुती तहां एक
वडा जेवरा बांधिकें लटकाय दीयो और श्री स्वामि
नी जी श्री दामां अपनो भाई अंतरंग सषा हें तिनकों
जगाइ कही जो आजु एक वडो कार्य पर्यो है सो आतुरी
कियो होइगो प्रभु पधारे हें जो ललिता ने ष[illegible] करी
में जेवरा लटकायो है ॥ सो प्रभू कैसें जानेंगें ॥ तातें तू जा
इकें प्रभु को षडिक में करि आउ ॥ तव श्री दामां तत्काल
उठिकें पोरी के किवार षोलन लाग्यो ॥ तव पोरीयानें
कह्यो तू कोन है कहां जात है ॥ तव श्री दामां नें कह्यो जो
एक गाँव वती नीजत हे ॥ सो वहुत दुषित है ताको मैं षाड
नै जाय

ल में जाइ नीत रकरि आउं ॥ तव श्री दामां कोंना हों के
सें करें सो किवार षोलि दीए तव श्री दामां तत्काल
प्रभु पास जाय प्रभु कों हूं दपसों जगाइ जो यो ॥ तव प्र
भू तो मन में डरपे जो यह कोंन है ॥ मा को द्र षे गा तो वहु
त ही दुःष होइगो ॥ सवेरें नंद सों कहेगो ॥ तप्या अवहीं
व्रषभान जी के पास लेजाइगो ॥ पाछें मधुरें मधुरें
बोले अरे भाई तू कोंन है ॥ तव यह वो ज्यों जो में श्री दा
मां हों ॥ तव तो प्रसन्न होइ नेटिकें कहे जो हे प्रिय मि
त्र अव तू कछू उपाय करि जो राधा को दर्शन होइ
॥ तव श्री दामां कह्यो जो षरिक में चलो ॥ तव षरिक के
द्वार पर गए ॥ तहां दोइ गाइ श्री दामां वाहर तें षोलि
ग्वालन कों जगाइकें कह्यो जो ये दोउ गाय वाहर दुःषी
हें ॥ महमहें सोगो तरले नी हे तव किवार ग्वालन षोलि
दीये ॥ तव श्री दामां नें कह्यो तू दूसरे षरिक में जाइ सो
इ ॥ इहां में सोऊंगो ॥ तव वह ग्वाल दूसरे ॥ षरिक में गयो
॥ और श्री दामां प्रभून कों नीतर ले जाइ जेवरा दिषाइ

वर्षा
१८४

कैकह्यो जो तुम श्री स्वामिनी जी को लेके याई मारग आ
ई यामें षडिकके द्वार परवेठोहो ॥ ऐसे कहिके श्री दामो
तो जाइवे ठाढे ॥ और आपु श्री ठाकुर जी जेवरा पकरि वा
हीं हाथ एक ऊंची ही तहां चढिके ऊपर पधारे ॥ इहां श्री
दामोंने विचार कीयो जो प्रभूतो चढि गए ॥ परंतु स्वा
मिनी सखी कोन प्रकार उतरेगी ॥ तब वडी चोकी धरि
तापर छोटी चोकी धरि नो चोकि पाकी नाहीं ऊपर वा
री ताई ल[illegible]गाइके षडिककी द्वार लगाय द्वार पर
सोइ रह्यो ॥ इहां श्री ठाकुर जी खिरकी में चढि सगरे आ
भूषन भली भांति गाढे करि अपनो पीतांबर सकों रि
कारि कांमरि भली भांति जपेटि जइ जो अधकार में को
ई दिषे नाहीं ॥ या प्रकार मंद मंद पग धरत अत्यंत साव
धानतें चलें ॥ नेन्हीं नेन्हीं बूंद वरसत हैं ॥ यह समय वृ
षभांन जी के आंगन में आए तब ऊपर चित्रसारी पर
जाइवेको विचार करन लागे ॥ सो आंगन में पग सरक्यो
जो आपु तो दोऊ श्री हस्त टेकि के वेठि गए ॥ और श्री

भूषन जो गाढे ऊंचे चढायके गुज्जरे करे हते ॥ सो सर्व
धूटि परे उनके सब्द अत्यंत ऊंचे स्वर सों भये ॥ मानों का
मदेवकी दुंदुभी वाजी ॥ सो सब्द वृषभांनपुरा में गोपि
का महा दुषी हें जो आज मेहमें कोन भांति पधारेंगे ॥
तिनकों जताए ॥ सो सब जनने जांन्यो जो प्रभु पधारे हैं ॥
सो अपने अपने घरनमें सिंगार करि प्रभु पधारि
वेको विचार कर तिहुती ॥ सो पीछे खिरकीके मारग उ
तरिके ॥ श्री दामो तो मिलनी यांजी जासो धके हें ॥ सो ष
डिक में सब आई ॥ कोई दिन और हू ग्वाल षडिक में
रहते तिनको खिवता नाहीं ॥ ग्वाल सगरे जी जा सहाइक
हें ॥ व्रजभक्त षांन पांनादिक सों प्रसंन राषत हे ॥ या भां
ति सगरो समाज षडिक में इकठोरो भयो ॥ इहां आभू
षनको सब्द सुनिके वृषभांन जी की रत्ती जा सगरे गो
प गोपी जागके कहे जो आभूषनको षडको भारी भयो
सो कोई चोर आयो सो जी जीयो ॥ ताते मसाल वारि
कें ॥ सब देख्यो चाहीये ॥ सो त[illegible]लोग मसाल वारिकें

वर्षा आभूषनगहनाघरदेषतोज्याकोज्योंसवहैं॥ मसाल
१८५ लेकेसगरदेषनचलेतवश्रीजीविचारजोअबके
छनभई॥ मसालआवेगीतबचोरीप्रगटहोइगी॥ ता
तेंश्रीजीदे॥ षोलोसगरेठौरकेकिबारलगेहें॥ तबप्रसा
दीभंडारकेकिवारलगाइवेकीरीतनांहीं॥ कोईकोराव
मेंचहीयेतातेंप्रसादीभंडारमेंजाइछिपे॥ इहांकीरि
तीजोश्रीस्वामिनीजीपासदोरिआईजोबेटीतुमरि
आछेहो॥ तबललितानेकहीजोतुमइनकोरंचहूविं
तामतिकरोयो॥ तबकीरतीजीनेकहीहेललिताइ
सापामेंतुम्हारेंमेरासबेगीकोराषतहो॥ नीचेंप्रभूष
नकोषडकोभयोहे॥ सहांदेषनकोमेंजातहों॥ तबल
लितानेकहीतुमअबुषनजाहू॥ तबकीरतीजीनीचेंआ
ई॥ तहांमुषराश्रीस्वामिनीजीकीनानीजागीहतीसो
बालिजोचोरतोनिश्चयआयोहें॥ आछेंसावधानहो
इकेदेखदेषो॥ तबसर्वठिकानेंदेषनलागीतबश्री
स्वामिनीजीआरललितानमतोकियाजोचलोआप



नहूदेखियेंकहूंपकरे॥ जाइगेतोआछोनांहीं॥ यहवि
चारिनीचेंआई॥ सर्वठौरदेषे॥ सोपाएनांहीं॥ तबमुष
रावडीषबरदारचतुरहती॥ ताकेंजीयकोरतीजीअप
नेंघरमेंराषतिहती॥ सोकेवलमर्यादारूपहे॥ पुष्टिको
अंसलेसहूनांहीहें॥ तबमुषराबोलीजोतुमसबठौर
तोदेषआरचारहेसोठिकानोंतोनांहीदेख्यो॥ तबकी
रतीजीब्रषभानजीकहेसोबतावोतो॥ तबमुषरानेंक
हीजोआछेंमसाललेसावधानहोइकें॥ प्रसादीभंडा
रमेंदेखो॥ तबसर्वकहेंतहांचलो॥ सोयहबाततोतरश्री
ठाकुरजीसुनिकेंअपनेंमनमेंकहेजोअबकैसीहोइगी
॥ तबभंडारमेंटोकराटोकरीमालअनेकहें॥ जिनको
ही पारनोंमहाप्रसादकोपारनांही॥ सोश्रीठाकुरजीएककि
वारकेकोनमेंएकवडोमालकेनीचेंछिपिरहे॥ इहांश्री
स्वामिनीजीआरललितादिककहेंयहडोकरीवडी
प्रतिवंधरूपहे॥ परंतुआजकछूपरतोआछो॥ त
बसगरेमसालबारिकेभीतरगए॥ तहांश्रीस्वामिनी

वर्षा १८६

जोहूं सखिन सहित गई॥ तबललिताजी परम चतुर
हीसों देखिके बिचारके श्री स्वामिनीजीसों कही
जो यह कोने में मालहें वाके नीचे हे॥ तब श्री स्वा
मिनीजी अपनो लहंगा चहूंदिस फेलाइके वामें
ऊपर बेठी॥ जो ढूंढनको आवे सो आगे जाइ स
गरो भंडार ढूंढे॥ तब सगरे गोप और उपनंदजी
कहन लागे जो डोकरी तो झूठी हे॥ याही रात्रिको
सवनको अनुमानतिहे॥ याको नित्य भ्रम ही रहत हे॥
नित्य झूठ बोलतिहे॥ याके कहेको भलो विस्वास
करत हो॥ याप्रकार वाको झूठी करि सब बाहिर आ
ए॥ पाछें श्री स्वामिनीजी और ललिता विसाखा
हू बाहिर आई॥ तब मुखरा बोली जो तुम सगरे मि
लिके मोको झूठी किए॥ परंतु चोर याही कोठा में हे॥
जो न निकसे तो मोको चाहो सो करो॥ तातें एक ज
बर सो तारो मांकुद हूं॥ सो में लगाइके द्वार पर सो
उंगी प्रातःकाल उठि यारे में तुम सगरे॥ ढूंढिके

काढ्यो॥ तब सबनने कही डोकरी तू क्यों पचतिहे
झूठी परेगी॥ तब मुखरा बोली जो जो में कबहू झूठी परी
नाहीं प्रातःकाल याही मतें काढूंगी॥ या भांति बहुत
हठ करि तालो लगाय अपनी सज्या द्वारें आगे बि
छाइके सोई॥ तब जोगमायाने गहरि निद्रा करि दी
सो॥ तब श्री स्वामिनीजी ने ललितासों कही जो अब तो
कछू उपाय करो चाहिये तब ललिता विसाखाने मु
खराकी सज्या सावधानी सों तिबारी में धरि सज्या
में तें कूंची लेके तालो खोलिके॥ प्रभूको बाहिर निकासे
इतने में मुखरा जागी कूंची पर हाथ डारे तो कूंची ना
हीं॥ तब उठिके देखे तो सज्या तो तिबारी में॥ पाछें मु
खरा बोली अरे चोर आयो इतने में ललिता ताला
लगाय कूंची उहां डारि श्री ठाकुरजी को ले अपनी
चित्रसारी में श्री स्वामिनीजी सहित आजी गई॥ त
ब ललिताने श्री ठाकुरजी को कुंजनमें पूछें जो आ
अब कहा करिपागे॥ तब श्री ठाकुरजी कहें जो सज्या

वर्षो नीचेंतादिनतेंसेज्यानीचें बिछालबिछावनलागे॥ त
१८० वश्रीस्वामिनीजीकीसेज्यानीचें छिपे॥ इहांमुखराजा
गो।सबनकोंजगायकें कहीजोदेखोचोरकीवालइहां
मरासिज्याधरिदीनी औरकूंचीलेगयोसोतालापा
सपाई॥ तवसगरे मिलिकें सबठौरदेखें॥ श्रीस्वामिनी
जीकी चित्रसारीहूं देखिगए॥ पाछें कहूं पाए नांही॥ त
वकोईनेलोकही चोरनिकसिगयो॥ काहूंनेकही या
डोकरीकोभ्रममयोहे॥ सो याहिंचोंकि चोंकि उठतहे
॥ तवसगरें ढूंढिकें कीरतीजी वृषभांनजी सों[illegible]
नेमंदिरमें पाठसो श्रीस्वामिनीजीकों[illegible]
सो एकेपाठ॥ इहांमुखरानें अपनेंमनकें[illegible]॥ व
राखिकें भंडारकें आगेंद्वारपरसेनकिया॥ याभांतिस
वेंकोईसेनकिया॥ तवश्रीठाकुरजी औरश्रीस्वामिनी
जी ललिताविसाखाआदिसबसखी खिरकीद्वार
उतरिकें अबबागमेंहोइ सबखिडकमें आए॥ तहांस
मस्तस्वामिनीनसों मिलापभयो॥ पाछेंवनमें पधा॥

रवकों विचारकरयो॥ तासमयमेंहतोवरसतहींतें र
हिगयो॥ वादरदसोंदिसाछाए अत्यंत अंध्यारो॥
तवसगरभक्त अपनेंमुखढांपिकें॥ बरसांनेतें ग
हवरवनमें प्रभुसहित पधारे॥ तव अपनेंमुखारविं
द अंचलसोंखोलें॥ तहांकोटिचंद्रतें अधिकचंद्र
माकों उजिपारोभयो॥ तवसगरे मिलिकें प्रभुकों
अपनी अपनी कुंजमें पधराये॥ सबबरसाकों
भांनतभए॥ इत्यादिकब्रजकोंश्रीनंदरायजीवृष
भांनपुराकोंप्रकारहे ॥ अबब्रजकोंप्रकार॥
॥श्रीठाकुरजीगायचरावनकें मिसवनमेंपधार
तहें॥ तहांश्रीस्वामिनीजीव्रजभक्तसमस्तदधिवे
चनआदि॥ सूर्यपूजनआदिदेवीकात्यायनीसंके
तखेलभलाइत्यादिमिसकरिवनमेंआवतहे॥ तहां
वरसाहोतहे॥ तवसगरे सखागोपगाइनकें आधी
ब्रजकीछायातप्यांश्रीगिरिराजकीसिखरनी
चेबैठतहे श्रीठाकुरजीहूं श्रीगिरिराजऊपरप॥

वर्षा धारतहे ॥ तहां अनेक प्रकारकी रतन षचित तिवारी
१८८ मे विराजतहेंवरसा होतहें ॥ वरसाको सो नादे विश्राम
१८८ को उद्दीपन होतहें ॥ सो सकल मनोरथ पूरन करतहें ॥
रागमल्लार ॥ देषो माई स्यामो स्याम विराजे ॥ देषो स
षी गौर स्याम सुंदर तासी वांदे षत मन्मथ लाजे ॥ १ ॥ गोव
र्धन परवतके ऊपर मोरनकी कहोकार ॥ तैसेई घनगर
जे नहें चहूं दिसतें वरषतहें जलधार ॥ २ ॥ दामिनि दमकत
पवन झकोरत प्यारी डर पिउ रलागत ॥ रसिक प्रीतम
सुष विलसत दोउ कोकिला रस जागत ॥ ३ ॥ कबहूंक कुंब
नमें मेह बरसतहें ॥ तब श्री स्वामिनीजी श्री प्रभुजी
सों कहतिहें ॥ सो पद रागमल्लार ॥ सारी मेरी जी
जो नई अबही प्रथम पहिरि हों आई पिता वृषभान
दई ॥ १ ॥ अपनो पीतपट मोइ उढावो बरसा उदित भई
भीजे स्याम जाइगो यह रंग बहु विधि चित्र चढ़ी ॥ २ ॥ दे
हों कहा जाइ घर उत्तर डरपति हों अति हों ॥ कुंभनदा
स प्रभु गोवर्द्धन धर मुदित तन्न ढंगतई ॥ ३ ॥ या प्रकार श्री

स्वामिनीजी कहतहें ॥ तैसेंही पीतांबर उढाइ उछंग
मेलतहें ॥ इत्यादिक वनमें लीला करतहें ॥ और निकु
ज महल जहां हे ॥ तहां पुरुष मात्रको प्रवेश नाहीं
सगरे पसु पंछी सषी भावके हें ॥ तहां नित्य नौतन
प्रकारको विहार हे ॥ सो मनमें अनुभव हू कहें ॥ प्रग
ट कह्यो न जाई ॥ कछूक कहतहें ॥ रसिकजनके भाव
के अर्थ या रीतसें बहुल पुरगो श्री महाप्रभुजीकी
कृपातें अषाढ सुदी ॥ ११ ॥ देवसयनी ॥ पाग पिछो
रा ओढनी सो सब रंगकी मोतीकी आरती ॥ राजभो
गमें कछू सामग्री वेंगन सककंद चनाकी भाजी
सिंडरि कचरी या हरी नए सिंघाडा प्रबोधनी तांई नां
हीं ॥ कुंभा सिंका श्रृलरूपाके भावके हें ॥ अब श्री महा
रानीजीके कुंजमें नित्य नौतन रमणाहें ॥ तातें श्री
महारानीजी चढ़तहें आषाढ सुदि ॥ १५ ॥ अन्यंग पा
ग पिछोडा सब हरे रंगकी श्रीविरोजीको बूटि घी बूरा
डारें ॥ ताके लडू आराजभोगमें सेव घी छिकें बडा

१.श्री। व्रूषरा (बिके चं द्रमांको हिंडोराहोइ॥ मद्वानहोइतास
१९६ मय॥ प्रभाततथासांझकोंश्रीजी कुंजमें झूलें॥ पाछें
घरआवें॥ तवसंझाआरतीसात घरमें॥ नंदालयमें
सो संझासमय घरआइके झूलें॥ ताही तें श्रीजी कें र
वहूंवेटी पहलें झूलावें॥ सातघरमें पीछें झूलावें।
॥प्रथमश्रीजीकें ह्यां हिंडोरा प्रगटनांही ही॥ ए
कदिनस्यामढाकपरदेष॥ दूसरे दिनराधाकुंडमें॥
स्यांमवटपरतीसरे दिनगो विंदस्वांमिकी कदम
षंडीमेंदेष चोथेदिन गो विंदकुंडपरदेषे॥ तबसें
जगमोहनी प्रगटकरेइ ह्यां श्रीजीकी श्री स्वांमिनी
जी आलंबनरूपस्वांमिनीजी रूपहें तातें प्रगटनाकी
ए॥ यही पनभावश्री चंद्रावलीजी सर्वलीलाप्र
गटकियें॥ हिंडोरामें झालर गादी तकियासव सि
द्धिकरि रहतहें॥ ढांकि देतहें काहेतें वहोरिनुकों
भोग हिंडोरामें भरिसावनरा ति दिनकरतहें॥ दो
॥ केष्पंभज लिता विसाषाजी अरुनवसनपहिरें।
हें॥ तातें लालरंगहें॥ षंभहें सो चरनहें मरूवाहें॥ सो
दंडकारएप॥ श्रीलिरूपाश्री हस्तके भुजदंडहें॥ कल
सासीसफूल चुडामन्नके अंचल डांडी॥ ष॥ हसो
जुगलसरूपके हस्तहें॥ तथा वोमद छिनभागकें
रूपेके हस्तहें॥ प्रभूपकरतहें झोटामें सूक्षमवे
षमकोमलहें॥ वीचकोवेलननहें सो हूदयकोभा
वहें ताकोदोऊ दिसलटकनहें॥ सो कुंचकोभाव
हें॥ वीचमें अनेकरूंमिकाहें॥ सो आभरनादिक
पहरेंहें फोंदनाहें सो मनकी चोटीहें॥ गादीहे
सो श्रीचंद्रावलीजीकी गोदहें॥ वीचके फूलसा
सीसफूलहें॥ तकीयापीछेकों हूदयसो लगाइवे
कोहें॥ झोटाहें सो रमन महलहें॥ लालरिरंग॥ ध
के लहंगातथा तो नती नौ जूपस्वांमिनी ऊपरहे
॥तथासाडीको भावहें॥ साडिमें किनारि झलझला
तहें॥ पीरीमुख्यलाल चंद्रावलीजी॥ हरीनंदगो
पकुंमारका स्यांमश्री यमुनाजी हरी महारांनी।

वर्षा जी के भावसों ॥ मानरि बस्त्र वदलत हैं नाएन एं श्रृंगार ना
रु ना एकुं जमें रचनां धुजा ॥ ध ॥ चारोंके पंचल प्रथम अप्र
२० धिवासन भगवत श्री पुरुषो समस्त हिंडोरा रोहनार्थं
हिंडोला धिवासनमहं करिष्ये ॥ पंचमडोडी नकों चंदन
लगाय धूप दीप करि भोग धरि तुलसी समर्पन आरती
करि श्री ठाकुरजी कों पधरावें ॥ अभ्यंग वस्त्र लाल ह
रे ॥ मिलें पाग लाल ॥ हरे पिछोडा पिछवाई भक्तन ॥
की उत्तरीरूप हैं ॥ या भाव श्री गुसांईजी कहे हैं श्लोक ॥ नि
वेदितात्मा भावेन महतां रूपया तथा । देहि स्वात्मरू
पत्वं दास्यं श्री पुरुषोत्तम ॥ १ ॥ कदंबमें हिंडोरा हेलो का
म भाव है ॥ ना पल्लव तहें कदंब को सो भक्तन की कामना
तथा श्री जी की पूरन करें ॥ ताते विष्णु की जीलोमें क
ल्पवृक्ष हैं कहे ॥ सो ब्रजके कदंबकी कोटानकोटि छटा
में ले एक धरे हैं ॥ ताते दंडकारण्य बारे कोवर दिए कद
ब पर वैठिके ॥ कदंब श्री चंद्रावलीजी रूप है ॥ तिनको ॥
संग बताया बस्त्र श्री चंद्रावलीजी की गोदमें वैठिकें

बर दिए ॥ ताते गोप्य करनार्थ कदंब नाम कहे ॥ ताते
केवल रमन है ॥ ताते सषा श्री वलदेवजी के निकट
नाहीं ॥ रानीजी के स्याकी रसो जी के स्या भक्त सहित
प्रभु है ॥ पुरुषाकारन हो है हिंडोराकांमको उद्दीपन
भाव है ॥ रस पात्र प्रभु कें भक्त भक्तके प्रभु ॥ ताते सिं
ध्यामें दिसमें हिंडोरा षाट पर झूलत हैं ॥ पैंडो तहां रंग
चोकी विछत है ॥ हिंडोरा गोवर्द्धन परवत पर त
था डोलतिवारी श्री यमुनाजी की पुलिनमें प्रथम
श्री स्वांमिनीजी पाछें प्रभु नंदालयके भावतें ॥ प्र
थम प्रभु पीछें श्री स्वांमिनीजी नकवेसरि, कंणभर
रन, तिमनीयां, प्रोंहोंची, दुलरी, घुंघरु, टिका, नूपूर
जेहरि, चिबुक, सिसफूल, अलकवेनी, पदिक, क
नक फूल ॥ पोतके हार, वडी मालाफूलनको, मु
का, मूंगा, याभांति मो टाचारो दिएलहो प्रभु पधारें ॥
तवसबन को प्रसिद्ध दर्सन ॥ जहां प्रसिद्ध श्री स्वां
मिनीजी नहाइ तहां भावसों वस्त्र भूषन धरे ॥ अप्र